आदर्श रामायण

॥ श्री राम ॥

र्श रामायण

५

महाकवि महात्मा रामचन्द्र वीर

卐

॥*॥ श्री राम ॥*॥

आदर्श रामायण

प्रणेता

महाकवि महात्मा रामचन्द्र वीर

श्री वीर हनुमान मन्दिर, पञ्चखण्ड पीठ

विराटनगर (जयपुर, राजस्थान)
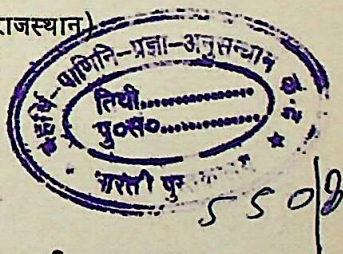
प्रकाशक

आचार्य धर्मेन्द्र शर्मा

संचालक, आदर्श हिन्दू प्रकाशन

पञ्चखण्डपीठ, विराट नगर

जयपुर (राजस्थान)

[भारतवर्ष]

प्रथम संस्करण
४००० चार सहस्र

मूल्य १.५० पैसे

अवतरणिका

गो-भक्त शिरोमणि मृत्युञ्जय महात्मा रामचन्द्र वीर महाराज ने रामकथामृत (वीर रामायण) महाकाव्य की रचना कर भगवान राम की वास्तविक कथा हिन्दू जनता को दी है। वे हनुमान महाप्रभु को कपि मर्कट (बन्दर) नहीं मानते। बाली, सुग्रीव, अंगद, नील, नल बन्दर नहीं थे, नल तो विश्वकर्मा के पुत्र ब्राह्मण थे और जामवन्तको भालू बताना अज्ञान का परिचय देना है।

लंकाधीश रावण के दस सिर नहीं थे, बीस हाथ भी नहीं-रामकथामृत इसकी व्याख्या करता है। किन्तु उस महाकाव्य की रचना करके भी महात्मा वीर को सतोष नहीं हुआ। उन्होंने सुन्दर मनोहर राघवेन्द्र चरित्र की रचना अपने १६६ दिनों के महान् अनशन में प्रारम्भ की थी। राघवेन्द्र चरित्र की रचना १ वर्ष तक वे करते रहे और अब उन्होंने अयोध्या की चतुर्थ यात्रा के पश्चात् यह आदर्श रामायण रचकर भगवान राम के भक्तों की और हिन्दी भाषा की महान् सेवा की है।

माता भगवती सरस्वती की उन पर पूर्ण कृपा है, इसका प्रमाण यह आदर्श रामायण है।

रामनगर चम्पारण्य के सेठ जयनारायण रामजी अग्रवाल ने आदर्श रामायण के लिए १००० रुपयों का कागज प्रदान करके महात्मा वीर की सेवा की है। उनको धन्यवाद।

पञ्चखण्ड पीठ, विराटनगर
जयपुर, राजस्थान
मार्गशीर्ष शु० पूर्णिमा
सं २०२८ विक्रमी

धर्मेन्द्र शर्मा

卐 ॐ 卐

आदर्श रामायण

महात्मा रामचन्द्र वीर प्रणीत

जय जय गणेश भगवान कृपा के धाम।
विघ्नों का नाशक दिव्य आप का नाम॥
जय सरस्वती माता विद्या की मूर्ति।
मेरी कविता में भरदो शुचिता स्फूर्ति॥
जय बज्रअंग भगवान आप हनुमान।
रुद्रावतार भगवान राम के प्राण॥
जय सीतापति भगवान राम सुख धाम।
मर्यादा पुरुषोत्तम अति ललित ललाम॥
जय जनक नन्दिनी माता सीता धन्य।
जय सती शिरोमणि महिमा मयी अनन्य॥
जय बाल्मीकि ब्रह्मर्षि काव्य के मूल।
रामायण यदि है सिन्धु आप हैं कूल॥
तुम आदि महाकवि दया धर्म के धाम।
कर गये आप ही अमर राम का नाम॥
जय महाव्रती लक्ष्मण संयमी महान।
कर गये राम हित अपना जीवन दान॥
सह सके न एक घटि का भी राम वियोग।
कर लिया मृत्यु से सत्वर शुभ संयोग॥
जय पुरी अयोध्या दानी दशरथ भूप।
जय सयू सरिते अति यशमयी अनूप॥

जय रानी कौशल्या ममता साकार।
ले लिया आप द्वारा हरि ने अवतार।।
जय दशरथ नन्दन रामचन्द्र भगवान।
मर्यादा पुरुषोत्तम सौन्दर्य निधान।।
राजेश्वर दशरथ के सुपुत्र बन आप।
कर चले नष्ट ऋषि मुनियों के संताप।।
जननी कौशल्या के जीवन आधार।
प्रकटे भूपर हरने भूतल का भार।।
लघु बन्धु सुमित्रा नन्दन लक्ष्मण बीर।
सौमित्र शत्रुहन सेवाव्रती सुधीर।।
माँ कैकेयी के पुत्र भरत धर्मज्ञ।
सद्धर्म सनातन न्याय नीति मर्मज्ञ।।
असुरों का करने भूतल से अवसान।
बन गये राम वैकुण्ठ नाथ भगवान।।
जब नारायण भगवान बन गये राम।
बन गया देश भारत ही तब हरि धाम।।
श्री राम, भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न सुभ्रात।
चारों सुबन्धु रहते समीप दिन रात।।
ले जन्म तीन माताओं से थे एक।
थे चारों में सद्गुण गण अतुल विवेक।।
चारो भ्राताओं में था स्नेह अपार।
इनके गुरु थे ब्रह्मर्षि बशिष्ठ उदार।।
चारों ने पढ़ कर गुरु से चारों वेद।
पढ़ धनुर्वेद छः शास्त्र कला के भेद।।
थे स्वयं अलौकिक ज्ञानवान मतिमान।
अतिरथी धनुर्धर नीतिमान बलवान।।

विश्वामित्र का यज्ञ

आये जब विश्वामित्र महामुनि नाथ।
ले गये राम लक्ष्मण को अपने साथ॥
ताटका राक्षसी को अरण्य में मार।
फिर हुए अग्रसर राम नृपेन्द्र कुमार॥
सिद्धाश्रम विश्वामित्र गये सानन्द।
प्रारम्भ किया उनने सुयज्ञ निर्द्वन्द॥
आगये निशाचर खल सुबाहु मारीच।
ले आठ सहस्र सशस्त्र निशाचर नीच॥
लग गये वहाँ करने अतिशय उत्पात।
ऋषि मुनि तपस्वियों पर करने आघात॥
तब दशरथ नन्दन राम हुए कटिबद्ध।
तूणीर धनुष ले वध हित हो सन्नद्ध॥
पापी सुबाहु को दिया उन्होंने मार।
फिर किया असुर सेना का भी संहार॥
नहिं मारा उनने अति कपटी मारीच।
बच गया राम की इच्छा से वह नीच॥
उस कपटी को भगवान राम का बाण।
ले गया सिन्धु तट किन्तु हरे नहीं प्राण॥
कर दिया उन्होंने सब असुरों का चूर्ण।
ब्रह्मर्षि उठे करके सुयज्ञ को पूर्ण॥
पथ निकट अहल्या का करके सत्कार।
मुनि संग चले दोनों अवधेश कुमार॥
जब गये जनकपुर राम बन्धु के साथ।
तब यज्ञ कर रहे थे मिथिला के नाथ॥
वह यज्ञ किया था भूमि शुद्धि के हेत।
आये थे विश्वामित्र लिये अभिप्रेत॥
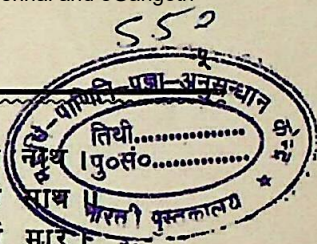
मिथिलेश जनक ने कर स्वागत सन्मान ।
पदतल धोये करके मुनि का गुण गान ।।
फिर किया प्रश्न कृपया कहिये मुनि नाथ ।
रवि शशि के सम हैं कौन आपके साथ ।।
बोले मुनि विश्वामित्र सुनो मिथिलेश ।
मेरे प्रिय राजेश्वर दशरथ अवधेश ।।
उनके सुपुत्र ये मनमोहन श्री राम ।
अति रथी धनुर्धर शोभा सागर श्याम ।।
लघु राजपुत्र लक्ष्मण बलशाली वीर ।
संयमी सुमित्रानन्दन हैं रणधीर ।।
श्री शिव शंकर का धनुष देखने राम ।
आये हैं हे भूपति विदेह निष्काम ।।
यह सुन विदेह ने दिया शीघ्र आदेश ।
ले आये सहस्र जन इक शकट विशेष ।।
था अष्ट चक्र संयुक्त शकट सुविशाल ।
थी लदी एक मंजूषा उस पर लाल ।।
मिथिलेश मृदुलतामय बोले सस्नेह ।
प्रभु शिव शंकर के धनु का यह है गेह ।।
युवराज राम अवलोकन करिये आप ।
मंजूषा में दिखलाता हूँ शिव चाप ।।
यह कह विदेह ने कर शंकर का ध्यान ।
उस महा धनुष का किया यथार्थ बखान ।।
यह धनुष उमापति शंकर का सुविशाल ।
यह दक्ष प्रजापति की सेना का काल ।।
नहिं उठा सका इसको कोई बलवान ।
इसने कर दिया लंकपति का अपमान ।।
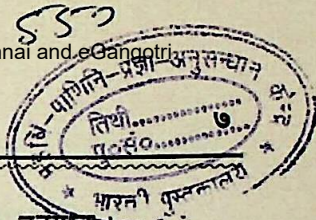
यों प्रकट कर रहे थे विदेह उद्गार।
कर दिया राम ने कौतुक बिना विचार ॥
मंजूषा में आजानु बाहुको डाल।
प्रभु शिव शंकर के धनु को लिया निकाल ॥
दूसरे हाथ से धनु को थोड़ा मोड़।
देकर झटका जब दिया क्षणों में तोड़।
तब धनुष टूटने की ध्वनि निकली घोर ॥
हिल उठी धरा प्रतिध्वनि भी हुई कठोर।
नहिं उठा सका था जिस धनु को लंकेश ॥
कर दिया राम ने दो भागों में शेष।
रह गये चकित राजर्षि जनक मिथिलेश ॥
आश्चर्य मग्न था जन समुदाय विशेष।
हो गये मुग्ध श्री मिथिला धीश विदेह ॥
श्री रामचन्द्र से बोले यों सस्नेह।
यद्यपि है मुझको धनुष भंग का क्लेश ॥
पर राम आप पर है अनुराग विशेष ॥
यह शंकर का धनु परशुराम भगवान।
धर गये यहाँ थे स्थान सुरक्षित जान ॥
माँगेंगे जब वे धनुष करेंगे रोष।
नहिं उन्हें दे सकूंगा तब मैं सन्तोष ॥
वे कर देंगे मेरा सर्वस्व विनाश।
ज्यों किया सहस्राजुंन का उनने नाश ॥
प्रभु शिव शंकर के वे हैं शिष्य प्रधान।
तप त्याग तेजमय परशुराम भगवान ॥
पर उनके पद पद्मों पर पड़ तत्काल।
करके प्रसन्न दूंगा संकट को टाल ॥

ब्रह्मर्षि महा मुनि मेरा है अनुरोध ।
आशा है नहीं करेंगे आप विरोध ॥
मैं मुग्ध हो गया रघुकुल मणि पर आज ।
सजवाऊँगा इनके विवाह का साज ॥
मैं अपनी पुत्री सीता का कर दान ।
करता हूँ अब वैदिक विधि युक्त विधान ॥
यह सुन कर बोले मुनिवर विश्वामित्र ।
तत्काल भेजिये अवधपुरी को पत्र ॥
आजावें मिथिला में दशरथ अवधेश ।
तब ही विवाह में होगा हर्ष विशेष ॥
यह सुन विदेह ने लिखवा कर शुभ पत्र ।
भेजा अश्वारोही दूतों को तत्र ॥
मुनि सहित राम लक्ष्मण की सेवा हेत ।
कर दिये जनक ने मन्त्री मुख्य सचेत ॥
द्रुत गति से लेकर पत्र अयोध्या धाम ।
पहुँचे दो तरुण दूत सत्वर अविराम ॥
पढ़ पत्र हुए आनंदित दशरथ भूप ।
सजवायी वरयात्रा अति अतुल अनूप ॥
आ गये जनकपुर जब दशरथ सम्राट् ।
पहुँची बरात रथ कुंजर सहित विराट ॥
थे संग अवधपति के ब्रह्मर्षि बसिष्ठ ।
मंत्री सुमंत्र ऋषि मुनि विद्वान विशिष्ठ ॥
सेनापति थे सेनाधी थे सामन्त ।
ब्राह्मण क्षत्रिय थे वैश्य श्रमिक पर्यन्त ॥
थे स्वर्णकार रथकार सुमालाकार ।
नापित थे रजक श्वपच एवं घटकार ॥

मिथिलेश जनक ने स्वागत कर मोत्साह।
कर दिया राम सीता का समुद विवाह॥
लघु सुता उर्मिला का कर कन्यादान।
श्री लक्ष्मण का कर शुभ विवाह सविधान॥

वीर छन्द

अपने लघुभ्राता कुशध्वज की, कन्याएँ दो गुणगण खान।
विधियुत भरत शत्रुहन को कर दिया जनक भूपति ने दान॥
करके भरत माण्डवी का शुभ विवाह हर्षमय हुए विदेह।
किया शत्रुहन का सुकीर्ति से, परिणय विधिपूर्वक सस्नेह॥
जिस प्रकार भूपति दशरथ के, गृह में प्रकट हुए भगवान।
लक्ष्मण भरत शत्रुहन प्रकटे सकल सद्गुणों युक्त महान॥
उसी भाँति मिथिलापति के भी पुण्यमयी कन्याएँ चार।
आई थीं उस धराधाम में, करने पतिव्रत का जयकार॥
अवध नाथ की पुत्रबधू बन चलीं अवध पतियों के संग।
विदा हुए भूपति विदेह से अवधनाथ ले हर्ष उमंग॥
विश्वामित्र महामुनि ने कर राघवेन्द्र का परिरम्भण।
कहा विश्व कल्याण हेतु अब करें धरा का भार हरण॥
मर्यादा पुरुषोत्तम ! अब मैं उत्तर में करके प्रस्थान।
हिमगिरि में जाकर बैठूंगा, करने को योगानुष्ठान॥
मुनि बसिष्ठ भूपति दशरथ से, बिदा हुए मुनि विश्वामित्र।
चले राम तब अवधपुरी को, पथ में हुआ प्रसंग विचित्र॥
गये जनकपुर से वरयात्री, योजन तीन अवध कीओर।
आंधी मेघबृष्टि भूकंपन, व्याप्त हो गये सहसा घोर॥
इन प्राकृतिक प्रकोपों को ले, प्रकटे परशुराम भगवान।
और दिखाया शंभु धनुषहित, शोक और आक्रोश महान॥

किन्तु राम की मर्यादा का आदर्शों का कर दर्शन।
राघवेन्द्र का परिरम्भण कर किया शीघ्र प्रत्यावर्तन ।।

आये सुत बन्धुओं को लेकर श्री दशरथ कौशल के नाथ।
मर्यादा पुरुषोत्तम आये श्री मिथिलेश सुता के साथ ।।

धूम मच गई अवधपुरी में, हर्ष मग्न हो पुरजन बृन्द।
स्वागत करने हुए अग्रसर, अति उत्साह मग्न सानन्द ।।

पुरी अयोध्या के नर नारी, वृद्ध तरुण शिशु और किशोर।
बाट हाट एवं गृह गृह में, उत्साहित हो चारों ओर ।।

करते थे गुणगान राम का, वितरित करते थे मिष्ठान्न।
मोदक पेड़ें खीर इमरती रसगुल्ले गूंजी पकवान्न ।।

उसीं समय आ गये अयोध्या गिरिव्रजपुर के राजकुमार।
कैकेयी के बन्धु युधाजित, करके समुचित शिष्टाचार ।।

आग्रह करके अवधेश्वर का लिया युधाजित ने आदेश।
संग भरत को लेकर लौटे गिरिव्रजपुर कैकेय प्रदेश ।।

चले गये श्री भरत अवध से श्री शत्रुघ्न गये थे साथ।
उन्हें देखकर हुए प्रफुल्लित भूप अश्वपति गिरि व्रजनाथ ।।

सम्राट राज राजेश्वर दशरथ भूप।
थे धर्म धुरन्धर रण नीतिज्ञ अनूप ।।
थे महारथी अतिरथी और रणधीर।
करुणा ममता के धाम असम प्रणवीर ।।
आया उनके मन में यह उच्च विचार।
दे दूं सुपुत्र को अब शासन का भार ।।

सम्राट् राम का सुनलूं जय जयकार।
आनन्द हर्ष का उमड़े सिन्धु अपार॥
रघु के सिंहासन पर वे जायें विराज।
मैं स्वय राम को कहूं नृपति महराज॥
गुरु बसिष्ठ से लेकर नृप ने आदेश।
आयोजन राम राज्य का किया विशेष॥
सज गये अयोध्या के सब गृह गृह द्वार।
नर नारी पुरजन में था मोद अपार॥
श्री राम बनेंगे अब भारत के नाथ।
यह कहते थे सब बहुत चाव के साथ॥
मध्यान्ह समय में राज्योत्सव है आज।
श्रीराम बनेंगे अवधनाथ महाराज॥
बज रहे अयोध्या में थे अगणित वाद्य।
गोमुख पणवानक भेरी मृदुतन आद्य॥
सहसा हो गया महान रंग में भंग।
अनुचरी मंथरा द्वारा उठा प्रसंग॥
वह गई कैकई रानी के जब पास।
बोली अभिनय कर लेकर लंबा श्वास॥
देखो तो रानी भूपति का षडयन्त्र।
कर दिया भरत को पूर्णतया परतन्त्र॥
कौशल्या नन्दन राम बनेंगे भूप।
लक्ष्मण होंगे युवराज अन्याय अनूप॥
पर हाय तुम्हारे पुत्र भरत हैं दूर।
उनके प्रति बूढ़े भूप बन गये क्रूर॥
रह गये भरत हैं हा अधिकार विहीन।
वे सदा रहेंगे रामाज्ञा में दीन॥

कैकेयी बोली दुष्टा सत्वर भाग।
आई है यहाँ लगाने जल में आग॥
है नहीं भरत में और राम में भेद।
तू भेद कर रही इसका है अति खेद॥
तब नीच मंथरा ने कह कर के हाय!
उच्चारा मैं हूं सब प्रकार असहाय॥
मैं दासी हूँ मुझको क्या है अधिकार।
पर आप करेंगी पश्चाताप अपार॥
मैं जिस प्रकार आप के रही आधीन।
वैसे ही आप रहेंगी अतिशय दीन॥
कौशल्या के सम्मुख हो शोभा हीन।
उनके समक्ष हो जायेंगी अति क्षीण॥
ये शब्द मंथरा के थे विषमय वाण।
हो गये कैकयी के मर्माहत प्राण॥
कर लिया कैकयी ने निश्चय सत्वर।
नहिं राम बैठ सकते सिंहासन पर॥
यह कर विचार बिखराये सिर के केश।
कर लिया क्षणों में विकृत अपना वेष॥
गिर गई धरा पर सत्वर हुई कुरूप।
जब आये भूपति दशरथ शान्त स्वरूप॥
बोले हो क्यों प्रिये! शोक में मग्न।
क्यों करती हो मेरा हृदयस्तल भग्न॥
बोली कैकेयी जब था युद्ध महान।
तब दिये आपने मुझको दो वरदान॥
यदि प्रण पालक हों तो करिये सम्पन्न।
अन्यथा ग्रहण मैं नहीं करूंगी अन्न॥

पहले वर में अब बने भरत अवधेश।
वरदान दूसरे से नहिं पाना क्लेश॥
चौदह वर्षों तक राम करे वनवास।
आज्ञा सुनते ही करदे आज प्रवास॥
कैकेयी के ये वर थे घृणित कठोर।
इनको सुन नृप को हुई वेदना घोर॥
सह सके न राजेश्वर दशरथ यह शोक।
छा गया हृदय में तम भागा आलोक॥
गिर पड़े मूर्छितावस्था में अवधेश।
दौड़े अनुचर लेकर दुःखद सन्देश॥
आये सत्वर नृप के समीप श्री राम।
बोले उठिये हे सत्य धम के धाम॥
बोली कैकेयी यदि तुम हो पितु भक्त।
करदो सत्वर तुम कौशलपुर को त्यक्त॥
तत्काल करो बनवास हेतु प्रस्थान।
नृप के हो जावें सफल उभय बरदान॥
चौदह वर्षों तक वन में करना वास।
नहिं आना पुरी अयोध्या के तुम पास॥
यह सुन कर मर्यादा पुरुषोत्तम राम।
करके प्रणाम नत मस्तक शोभा धाम॥
सस्नेह पिता के चरणों पर धर शीश।
बोले राजेश्वर! दें मुझको आशीष॥
मैं जाता हूँ सत्वर अविलम्ब अरण्य।
माता का आज्ञापालक बनूँ अनन्य॥
मूर्छा से होकर मुक्त नृपति अवधेश।
बोले हे राम! मुझे है अतिशय क्लेश॥

तुम हो मेरे सर्वस्व तुम्हीं हो प्राण।
तुम बिन यह मेरा तन होगा निष्प्राण ।।
मुझको तुम सत्वर बन्दी गृह में डाल।
बन जावो विस्तृत भारत के भूपाल ।।
बोले मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम।
महाराज आप हैं सत्य धर्म के धाम ।।
मैं सफल करूँगा त्वरित आपके वर।
बैठेगा बन्धु भरत सिंहासन पर ।।
मैं अभी जा रहा हूँ सोत्साह अरण्य।
वन यात्रा में यह जीवन होगा धन्य ।।
यह कह कर मर्यादा पुरुषोत्तम राम।
चल दिये पिता को कर सस्नेह प्रणाम ।।
वे गये त्वरित मां कौशल्या के गेह।
बोले जननी से अति विनम्र सस्नेह ।।
मां मुझे दिया लघु माता ने बनवास।
करना है वन में चौदह वर्ष निवास ।।
आजाऊँगा जब होगी अवधि व्यतीत।
आशीर्वाद मुझको दे दो सप्रीत ।।
यह सुन कर जननी बोली करुणा युक्त।
मैं नही करूँगी तुम्हें धर्म से मुक्त ।।
तुम रहो धर्म से युक्त करो वनवास।
मैं जीवित रह कर सदा रखूंगी आश ।।
प्रत्यावर्तित होगा मेरा प्रिय राम।
आवेगा वह शुभ दिवस और शुभयाम ।।
मेरा ही तो है भरत बने वह भूप।
आदर्श जगत में स्थापित करे सुरूप ।।

जिस अरण्य में जायेगा मेरा राम।
वह बन जायेगा स्वयं सुखों का धाम॥
है नहीं विश्व में कहीं राम को भय।
मेरा प्रिय सुत है अति बल विक्रममय॥
बेटा इसको ही तो कहते हैं भाग्य।
सौभाग्य कहूँ या इसे कहूँ दुर्भाग्य॥
जब मची हुई थी राज तिलक की धूम।
यह हाय भाग्य का चक्र गया क्यों घूम ?
कह उठी सुमित्रा माता कर निश्चय।
जाने न अकेला दूंगी है निर्णय॥
मैं भेज रही हूँ लक्ष्मण को भी संग।
नहिं कभी करेगा वह सेवाव्रत भंग॥
नहिं कभी हुआ है लक्ष्मण राम वियोग।
मिल गया भाग्य से उसको स्वर्ण सुयोग॥
सहसा लक्ष्मण आगये वहीं हो खिन्न।
बोले भूपति हो गये धर्म से भिन्न॥
वे करते हैं अतिशय अधर्म अन्याय।
मैं स्वयं करूंगा आज अवध में न्याय॥
श्री राम बनेंगे भारत के सम्राट।
इनका विक्रम है अतुल अनंत विराट॥
रघु कुल का है इनको उत्तराधिकार।
बनजाय भरत नृप यह है घृणित विचार॥
श्री राम हेतु मैं युद्ध करूंगा घोर।
अन्यायी नृप को दूंगा दंड कठोर॥
बोले कौशल्या नन्दन बन गम्भीर।
सौमित्र हो गये तुम अत्यन्त अधीर॥

ईश्वर समान हैं पिता पूज्य अवधेश ।।
उनके विरुद्ध कह गये कुवाक्य विशेष ।।
वे वन्दनीय हैं सत्य धर्म के धाम ।
उनकी प्रणरक्षा हेतु जायगा राम ।।
वन में जाकर कर चौदह वर्ष व्यतीत ।
आजाऊँगा मैं फिर सानन्द सप्रीत ।।
मेरा प्रिय भरत बने भारत का भूप ।
मेरे स्वभाव के होगा यह अनुरूप ।।
वह न्याय नीति से युक्त करे शासन ।
मत करो भंग तुम कदापि अनुशासन ।
यह सुन करके गिर पड़े उर्मिला नाथ ।
रोकर के बोले अति करुणा के साथ ।।
अग्रजा मुझको ले चलो विपिन में संग ।
अन्यथा हृदय गति मेरी होगी भंग ।।
मैं मर जाऊँगा बिना आप के राम ।
मेरे जीवन सर्वस्व आप हैं राम ।।
श्री लक्ष्मण के सुन करुणामय उद्गार ।
पुलकित होकर बोले करुणा अवतार ।।
लेलो धनु अगणित शर असि परशु विशाल ।
करनी है अपने को यात्रा तत्काल ।।
मैं सीता से मिल आता हूँ सत्वर ।
तुम हो जाओ यात्रा के हित तत्पर ।।
जल पीने को ले चलो कमंडलु दो ।
अनिवार्य कार्य हित सुदृढ़ रज्जु भी लो ।।
यह कह माताओं को किया प्रणाम ।
चल दिये धर्म के संरक्षक श्री राम ।।

पतीव्रता जानकी से बोले रघुवीर।
मिथिलेश नन्दिनी होना नहीं अधीर॥
माता कैकेयी की आज्ञा अनुसार।
कर वर्ष चतुर्दश अरण्य में संचार॥
मैं आजाऊँगा प्रिये! तुम्हारे पास।
तुम पुनर्मिलन का रखना दृढ़ विश्वास॥
करलो व्यतीत थोड़े हैं चौदह वर्ष।
मैं बनवासी बनता हूँ आज सहर्ष॥
सुन प्राण नाथ के वचन सत्यता युक्त।
बोलीं सीता क्या प्रभा सूर्य से मुक्त?
यदि प्रभाहीन नहि हो सकते दिनकर।
मेरे बिन रह सकते नहि प्राणेश्वर॥
मैं सदा रहूँगी प्रभो आप के साथ।
मुझको न छोड़िये हे प्राणों के नाथ॥
यह कह कर खड़ी हो गयीं वे तत्काल।
नहि सके राम उनकी इच्छा को टाल॥
बोले लेलो सीते पट अट्ठाईस।
माताओं से चल कर लेलो आषीश॥
मिथिलेश नन्दिनी त्वरित हुई तत्पर।
आगये सुमित्रानन्दन भी सत्वर॥
वे गये जहाँ थे दशरथ भूप अचेत।
थीं कैकेयी सन्तुष्टा और सचेत॥
कर स्पर्श पिता के पद तल ललित ललाम।
साष्टाङ्ग दंडवत कर सस्नेह प्रणाम॥
बोले मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम।
लक्ष्मण करलो तुम भी साष्टाङ्ग प्रणाम॥

ये चरण कमल फिर भी होंगे क्या प्राप्त ?
नहिं बोल सके हो गये सुवाक्य समाप्त ।।
कैकेयी को करके तत्काल प्रणाम ।
चल दिये राम वनयात्रा को अविराम ।।
विद्युत गति से यह दुख दायक संवाद ।
तब हुआ प्रसारित बन कर वाद विवाद ।।
तब व्याकुल हुआ समस्त नगर साकेत ।
आगये सहस्रों युवक प्रौढ़ समवेत ।।
था राज भवन का मार्ग भीड़ से युक्त ।
सब पुरजन थे सुख और शान्ति से मुक्त ।।
थे शोक मग्न सब किंकर्तव्य विमूढ़ ।
थी सब के आगे जटिल समस्या गूढ़ ।।
रथ निकला राजभवन से सहसा एक ।
पथ रोक लगा कहने पुरजन प्रत्येक ।।
रथ को रोको जा रहे हमारे राम ।
हम सबके हैं सर्वस्व हमारे राम ।।
मत जावो मत जावो बन में हे राम ।
कोशलपुर के अस्तित्व कृपानिधि राम ।।
कोलाहल करने लगे सर्व पुरजन ।
मत जावो मत जावो हे रघुनन्दन ।।
तब राम चन्द्र ने सविनय जोड़े हाथ ।
रथ बढ़ा हो गये पुरजन उसके साथ ।।
श्री रामचन्द्र का पा करके संकेत ।
बढ़ गया सुरथ वन में जाने के हेत ।।
रथ करता था आगे आगे प्रस्थान ।
करते थे पुरजन भी हो क्लान्त प्रयाण ।।

रथ हुवा राम का जब सर्वथा अदृश्य।
तब लौटे ब्राह्मण क्षत्रिय अनुचर वैश्य ।।
लौटाकर रथ बोले सुमन्त्र से राम।
कहिए जाकर गुरु को सविनीत प्रणाम ।।
मेरे निर्माता हैं गुरु देव बसिष्ठ।
उनको प्रणाम पहुँचा दें सचिव वरिष्ट ।।
फिर पितृ देव को भी सस्नेह प्रणाम।
कह दें माताओं को पुनः प्रणाम ।।
यह कह कर प्रत्यावर्तित किया सुयान।
आये स्वागत को गुह निषाद मतिमान ।।
कर शृंगवेरपुर के समीप विश्राम।
दूसरे दिवस श्री लक्ष्मण सीताराम ।।
नौका द्वारा होकर गंगा के पार।
जा भरद्वाज मुनि के आश्रम के द्वार ।।
मुनि से मिल करके अति श्रद्धा के साथ।
दक्षिण दिशि में चल दिए जानकी नाथ ।।
ब्रह्मर्षि महाकवि बाल्मीकि के स्थान।
सौमित्र मैथिली सहित गये भगवान ।।
कर बाल्मीकि को श्रद्धायुक्त प्रणाम।
बोले मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम ।।
अति पूजनीय ब्रह्मर्षि महाकवि धन्य।
नहिं हुआ आप सम कवि भूतल में अन्य ।।
मैं हूँ राजेश्वर दशरथ का सुत राम।
ये हैं मेरे सौमित्र बन्धु निष्काम ।।
ये जनक नन्दिनी सीता मेरे संग।
आई हैं पतिव्रत का लेकर अनुषंग ।।

अब वर्ष चतुर्दश कहाँ करें हम वास।
बोले महर्षि है चित्रकूटगिरि पास॥
मैं स्वयं चलूंगा शिष्यों को ले साथ।
निर्माण करेंगे कुटीर मेरे हाथ॥
अपने शिष्यों के संग महाकविवर।
चल दिये राम के साथ मुदित सत्वर॥
जा चित्रकूट में कामद गिरि ऊपर।
निर्माण कराये दो कुटीर सुन्दर॥
बोले ब्रह्मर्षि महाकवि हे श्री राम।
मर्यादा पुरुषोत्तम अनुकम्पा धाम॥
कीजिये यहाँ पर आप सहर्ष निवास।
स्वादिष्ट सलिल की सरिता भी है पास॥
सद्धर्म सनातन के रक्षक! यह स्थान।
अब हुआ आप के कारण तीर्थ प्रधान॥
मुनि को करके ममता से युक्त प्रणाम।
बोले कृतज्ञता ममता पूर्वक राम॥
ब्रह्मर्षि आपने किया हमें है धन्य।
कर सकता है उपकार न ऐसा अन्य॥
अति वन्दनीय ब्रह्मर्षि कृपा के धाम।
ममता दयालुता सद्गुण गण के ग्राम॥
जो किया आपने मेरा अति उपकार।
ऋण चढ़ा दिया मेरे पर प्रभो अपार॥
श्री रामचन्द्र के सुन अनुपम उद्गार।
हो गये स्नेह में मग्न महर्षि उदार॥
परिरम्भण राघव का कर ममतायुक्त।
कामदगिरि से हो गये महर्षि विमुक्त॥

रह गये अनुज प्रियतमा सहित श्री राम ।
बन गया धराधर कामद मोहक धाम ।।
तब चित्रकूट का भाग्य हो गया धन्य ।
लघु सरिता मन्दाकिनी हो गई धन्य ।।
इस ओर विराजे चित्रकूट में राम ।
उस ओर अवधपुर बना शोक का ग्राम ।।
सह सके न राजेश्वर दशरथ दुख घोर ।
प्रिय पुत्र राम बिन तम था चारों ओर ।।
श्रीराम! राम ! ! हाराम! ! ! बोल अवधेश ।
चल दिये स्वर्ग को देह रह गई शेष ।।
गुरुवर बसिष्ठ ने भेज दूत तत्काल ।
बुलवाये भरत और शत्रुहन लाल ।।
गिरिव्रजपुर से करके प्रत्यावर्तन ।
आ गये भरत एवं श्री शत्रु दमन ।।
तब हुइ अयोध्या थी शोभा से हीन ।
सब प्रजा हो गई थी अति दीन मलीन ।।
कंकेयी ने जब किया पुत्र का मान ।
तब कहा भरत ने कहाँ राम भगवान ।।
अवधेश्वर मेरे पिता गये किस ओर ।
क्यों शकुन हो रहे अशुभ हाय ये घोर ।।
बोली कंकेयी बेटा तुम हो धन्य ।
तुम जैसा नृप नहिं होगा जगमें अन्य ।।
तुमको सिंहासन छत्र मुकुट से युक्त ।
मैं देखूंगी होकर विघ्नों से मुक्त ।।
इस हेतु राम को भेज दिया वन बीच ।
कर गया चोट दुर्भाग्य महारिपु नीच ।।

अवधेश हो गये हाय ! देह से मुक्त ।
इस कारण पुरजन हुए शोक संयुक्त ।।
माता के मुख से वचन सुने जब म्लान ।
तब हुआ भरत के उर में क्लेश महान ।।
कर दमन क्लेश का क्षोभ हुआ बलयुक्त ।
आक्रोश रोष हो गये त्वरित संयुक्त ।।
बोले जननी से भरत खला! धिक्कार ।
तेरे दर्शन से होगा पाप अपार ।।
यह कहते कहते भरत हुए अति क्लान्त ।
शोकाकुल व्याकुल व्यथित अशान्त नितान्त ।।
गिर पड़े भूमि पर होकर त्वरित अचेत ।
मंत्री सुमंत्र ने आकर किया सचेत ।।
तब गये भरत मां कौशल्या के स्थान ।
चरणों पर गिरकर किया विलाप महान ।।
फिर बोले माता इस भूतल के बीच ।
मेरे समान नहिं होगा कोई नीच ।।
मेरे कारण ही गये विपिन में राम ।
चल दिये पिता भी शोक मग्न सुरधाम ।।
मैं पापी हूँ अपराधी हूँ अति घोर ।
प्रायश्चित करना है अब मुझे कठोर ।।
कर दूंगा अब मैं त्वरित अवध का त्याग ।
जीवन से मुझे हो गया पूर्ण विराग ।।
कर रहे भरत थे प्रकट हृदय उद्गार ।
आ गये वहाँ ब्रह्मर्षि वसिष्ठ उदार ।।
बोले हे वत्स ! उठो मत करो विलाप ।
देकर जनता को धैर्य मिटावो ताप ।।

स्वर्गीय पिता के शव का कर संस्कार।
पिण्डोदक श्राद्ध करो विधान अनुसार॥
उठ गये भरत गुरुवर को किया प्रणाम।
अन्तेष्ठी हित घोषणा करा अविराम॥
नरमेध यज्ञ करने श्मशान की ओर।
चल दिये भरत था शोक हृदय में घोर॥
थे अश्रु सलिल बरसाते श्री रिपुहन।
पीछे थे पुरी अयोध्या के पुरजन॥
राजेश्वर दशरथ के शव का संस्कार।
नरमेध यज्ञ था वैदिक विधि अनुसार॥
कर पिण्ड श्राद्ध द्वादश दिन के पश्चात।
रजनी बीती हो गया पवित्र प्रभात॥
गुरुवर वसिष्ठ तीनों माता ले साथ।
चल दिये भरत धर्मज्ञ माण्डवी नाथ॥
चल दिये सुमित्रानंदन रिपूहन संग।
रथ गज अनुचर सैनिक ध्वज और तुरंग॥
ब्राह्मण क्षत्रिय व्यवसायी श्रमिक किसान।
अगणित पुरजन भावुक सज्जन मतिमान॥
अश्वों पर और रथों पर था प्रत्येक।
कुंजरों और शकटों पर चले अनेक॥
पर भरत शत्रुहन बिना यान थे अग्र।
श्रीरामचंद्र से मिलने को थे व्यग्र॥
गुरु ने समझाया उनको अगिणत बार।
पर रथ पर चढ़ना नहीं किया स्वीकार॥
कंकड़ कंटक प्रस्तर या पथ की धूल।
श्री भरत हेतु हो गये सभी अनुकूल॥

जब गंगा तट पर जाकर किया निवास ।
तब राम भक्त गुह आये उनके पास ।।
बोले निषाद पति गुह क्या है उद्देश्य ।
मेरे हित क्या आज्ञा है हे अवधेश ।।
धर्मज्ञ भरत बोले मैं नहीं नरेश ।
मैं राम चरण रज का हूँ भक्त विशेष ।।
श्री राघवेन्द्र अवधेश गये किस स्थान ।
बतलावो हे गुह बन्धु सुनीति निधान ।।
बोला निषाद नायक गुह ममता युक्त ।
कामद गिरि चित्रकूट हैं अघ से मुक्त ।।
भगवान राम करते हैं वहाँ निवास ।
मिथिलेश नदिनी श्री लक्ष्मण हैं पास ।।
यह सुनकर भरत हुए करुणा से युक्त ।
नयनों से टप टप हुए अश्रु तब मुक्त ।।
गिर पड़ा भरत के चरणों पर गुह वीर ।
बोला महाराज न होवें आप अधीर ।।
कल ही हो जायेगा उनसे साक्षात ।
कामदगिरि चित्रकूट तो हैं विख्यात ।।
चलिये प्रभु सत्वर कर दूँ गंगा पार ।
नौका पर चढ़िये हे करुणा आगार ।।
चढ़ गये विविध नौकाओं पर सब जन ।
गुरुवर वसिष्ठ श्री भरत शत्रु सूदन ।।
माता कौशल्या आदि देवियाँ शीघ्र ।
बैठी नौकाएं चलीं हो गई तीव्र ।।
गुह ने सबको करके गंगा के पार ।
मृदुवाणी में बोला कर शिष्टाचार ।।

श्री भरद्वाज मुनि हैं ममता के धाम।
ठहरे थे उनके आश्रम में श्रीराम॥
यह सुनकर भरत गये आश्रम के द्वार।
साष्टाङ्ग दण्डवत करके शिष्टाचार॥
बोले विनम्र हो हे ब्रह्मर्षि उदार।
मैं अपराधी हूँ वसुन्धरा का भार॥
मेरे कारण ही गये राम वन बीच।
मैं हूँ अति पापी भरत अभागा नीच॥
यह सुन उठ बैठे महर्षि विद्यागार।
श्री मान भरत का किया सप्रेम दुलार॥
ममता से बैठा करके अपने पास।
बोले मुझको है यह अविचल विश्वास॥
श्री राघवेन्द्र के हो तुम अनुपम भक्त।
उनकी ममता में हो करके अनुरक्त॥
कर सकते हो अर्पण अपने तन प्राण।
तुम हो सकते हो त्वरित सहर्ष बलिदान॥
लक्ष्मण में तुम में कौन अधिक है भक्त।
यह सरस्वती भी नहिं कर सकती व्यक्त॥
यों भरद्वाज ने किये प्रकट उद्गार।
बहगई भरत के नयनों से जल धार॥
कर भरद्वाज की ममता का सन्मान।
नहिं भरत कर सके आगे को प्रस्थान॥
दूसरे दिवस हो विदा गये कुछ कोस।
देखा कामदगिरि चित्रकूट निर्दोष॥
बहती थी मन्दाकिनी नदी की धार।
था पवित्रता का जहाँ प्रवाह प्रसार॥

गज रथ थे अश्व और अगणित जन साथ।
पदयात्री बन चल रहे माण्डवी नाथ॥
ध्वज अवधराज्य का भी था उनके संग।
कामदगिरि पर हो उठा भ्रान्त अनुषंग॥
थे महारथी लक्ष्मण लेकर धनु वाण।
अति क्रोध मग्न सात्विकता से पा त्राण॥
उनको उत्तेजित देख राम भगवान।
बोले किस पर मारोगे भय्या वाण॥
लक्ष्मण बोले देखिये धरा की ओर।
आरही अयोध्या की सेना इस ओर॥
कैकेयी की ही है यह तो करतूत।
आता है हमें मारने उसका पूत॥
मैं स्वयं अकेला करके वाण प्रहार।
सब भरत सैन्य को सत्वर दूंगा मार॥
उठ बोले मर्यादा पुरुषोत्तम राम।
लक्ष्मण तुम हो अति रथी अतुल बलधाम॥
कर सकते हो तुम अवध सैन्य का चूर्ण।
पर हो तुम भय्या महा भ्रान्ति से पूर्ण॥
तुम गये भरत की सज्जनता को भूल।
नहिं भरत कभी होगा मेरे प्रतिकूल॥
कर सकता है वह मेरे हित तन त्याग।
तुम जैसा है उसका मुझमें अनुराग॥
आया है हमको ले जाने के हेत।
यह ही तो है उसका पावन अभिप्रेत॥
तुम रहो यहीं सीता देवी के पास।
मैं जाता हूँ तत्काल भरत के पास॥

यह कहते-कहते धर्मोद्धारक राम।
मर्यादा पुरुषोत्तम सद्‌गुण गण धाम॥
चल दिये भरत से मिलने को तत्काल।
पथ के तरु झाड़ों झंखाड़ों को टाल॥
पर्वत से नीचे उतर रहे थे राम।
चढ़ रहे भरत थे पर्वत पर अविराम॥
जब दिये दिखायी उनको अपने राम।
लग गये टपकने अश्रु विन्दु अविराम॥
ममता में होकर मग्न भरत अतिशय।
नहिं रहा ज्ञान पथ है अति बाधामय॥
कंटक कंकड़ प्रस्तर सब दिये कुचल।
सबको उलांघ कर सत्वर गये निकल॥
उस ओर कूदते आते थे भगवान।
जग के उद्धारक करुणा सिन्धु महान॥
श्री सीता पति ने अति ममता के साथ।
परिरम्भण करने हेतु बढ़ाये हाथ॥
वक्षस्तल से लिपटा करके सत्वर।
नहिं दिया भरत को प्रणाम का अवसर॥
गिर पड़े शत्रुहन जब पद पद्मों पर।
कर दिया भरत को मुक्त मिला अवसर॥
अब भरत हुए पद पद्मों पर अनुरक्त।
आराध्य देव के चरणों पर था भक्त॥
मिल गये भक्त को प्रभु के चरण कमल।
चरणों पर था मुख मंडल पूर्ण सजल॥
नयनों के जल से पद करते थे स्नान।
श्री रामचंद्र का भंग हो गया ध्यान॥

तब दिया शत्रुहन को सस्नेह उतार।
आगये निकट गुरुदेव वसिष्ठ उदार॥
गुरु के पद पद्मों पर झुक कर भगवान।
मर्यादा पुरुषोत्तम आदर्श निधान॥
बोले भगवन्! मेरे हित आये आप।
सह कर अरण्य के कष्ट और संताप॥
आये कोशलपुर से कामदगिरि वन्य।
यह चित्रकूट हो गया आज अति धन्य॥
यह कहते कहते गुरु वसिष्ठ के साथ।
पर्वत पर चढ़ने लगे जानकी नाथ॥
रामाश्रम में पहुंचे गुरुदेव वसिष्ठ।
सीता देवी ने किया आचरण शिष्ट॥
श्री लक्ष्मण ने करके साष्टाङ्ग प्रणाम।
फिर स्पर्श किये गुरु के पद पद्म ललाम॥
लिपटे लक्ष्मण श्री भरत स्नेह में मग्न।
उर्मिला नाथ की भ्रान्ति हो गयी भग्न॥
शत्रुघ्न लगे करने साष्टाङ्ग प्रणाम।
लक्ष्मण ने उनको उठा लिया अविराम॥
तीनों माताओं ने जब किया प्रवेश।
देखा उनका विधवाओं जैसा वेष॥
गिर पड़े पदों में माताओं के राम।
लग गये बरसने स्नेह अश्रु अविराम॥
बोले प्रधानमंत्री सुमंत्र मतिमान।
कर गये अयोध्यानाथ महा प्रस्थान॥
सुन पूज्य पिता का देह त्याग संवाद।
मर्यादा पुरुषोत्तम को हुआ विषाद॥

माताओं को बैठाकर ममता युक्त।
कर कर कमलों को श्रद्धा से संयुक्त॥
बोले गुरु से राघव करुणा के ग्राम।
चल दिये हमारे पूज्य पिता सुरधाम॥
मेरे वियोग को सह न सके वे हाय।
शोभा विहीन है उन बिन नृप समुदाय॥
वे नरेन्द्र मंडल में थे उच्चादर्श।
था किया उन्होंने भारत का उत्कर्ष॥
बोले गुरु जो जन्मा है अवनी पर।
अंडज जेरज स्वेदज उद्भिज नभचर॥
उसका अवश्य ही होवेगा अवसान।
पर मरकर अमर हुए दशरथ श्रीमान॥
यों बोल रहे थे गुरु वसिष्ठ गम्भीर।
बहता था राघव के नयनों से नीर॥
जब देखे भरत शत्रुहन के पद तल।
बोले राघव यों पोंछ दृगों का जल॥
नंगे पद ही तुम आये उभय यहाँ।
क्यों त्यागों दिये पदत्राण बन्धुओं कहाँ?
प्रिय भरत! तुम्हारे पद हैं शोभा मुक्त।
कंटकों और आघातों से ये युक्त॥
ठोकरें लगी हैं पथ में तुम्हें अनेक।
अंगुष्ट उंगलियाँ आहत हैं प्रत्येक॥
शत्रुघ्न तुम्हारे पद से बहता रक्त।
तुम दोनों पदत्राणों से क्यों हो मुक्त?
श्री राघवेन्द्र के सुनकर ये उद्‌गार।
बोले धर्मज्ञ भरत हे करुणागार॥

मेरे आराध्य देव जीवन आधार।
मैं आप बिना हूँ दीन हीन भूभार॥
जब तक न अयोध्या आप चलेंगे नाथ।
मैं बना रहूँगा अति असहाय अनाथ॥
सिंहासन पर जायेंगे आप विराज।
तब ही मेरे शरीर पर होगा साज॥
नंगे पद कुंडल और मुकुट से हीन।
रहकर सोऊँगा अब पर्यंक विहीन॥
कर अन्न लवण शर्करा स्वाद का त्याग।
रखना है सुख साधन से पूर्ण विराग॥
मैं निर्जल अनशन कर, दूँगा तन त्याग।
नहिं है मुझको इस जीवन से अनुराग॥
भगवान राम ने सुने भरत के बैन।
करुणा के जल से पूर्ण हो गये नैन॥
अवसर पाकर कौशल के सब सामन्त।
गुरु वसिष्ठ ऋषि परिषद मंत्री पर्यन्त॥
कह उठे अभी करिये प्रत्यावर्तन।
सम्राट राम भारत के जीवनधन॥
चलिये चलिये करिये सत्वर प्रस्थान।
महाराज भरत के बचा लीजिये प्राण॥
करिये हम सब पर कृपा दया के धाम।
मर्यादा पुरुषोत्तम हे ! राजेश्वर राम॥
महाराज भरत के आग्रह को स्वीकार।
कोशल की जनता का करिये उपकार॥
यह सुनकर के मर्यादा पुरुषोत्तम।
बोले गुरु से मेटिये भरत का भ्रम॥

मैं धराधाम पर आया हुँ किस हेतु।
अब भारत लंका मध्य बनेगा सेतु॥
गुरुदेव ! भरत को समझा दें यह बात।
दिन में ही लौटे यहाँ न होवे रात॥
थे त्रिकालज्ञ गुरुदेव वसिष्ठ महान।
ले गये भरत को सुदूर निर्जन स्थान॥
बोले राघव को करने दो बनवास।
ये यहाँ करेंगे निशाचरों का नाश॥
यदि अवधपुरी में राम करेंगे वास।
तो हो न सकेगा निशाचरों का नाश॥
मुनियों तपस्वियों की रक्षा का कार्य।
श्री राघवेन्द्र को करना है अनिवार्य॥
यदि ले जावोगे इन्हें अयोध्या धाम।
नहिं होगा तपस्वियों के हित का काम॥
करना है इनको निशाचरों का चूर्ण।
तब होगी तपस्वियों की रक्षा पूर्ण॥
अतएव लौट चलना है धर्मोचित।
श्री राघवेन्द्र को ले चलना अनुचित॥
यह बोल चुके गुरुदेव महर्षि बसिष्ठ।
हो गया भरत का मोह और भ्रम नष्ट॥
वे हाथ जोड़ बोले हे सीतानाथ।
ले जाता हूँ मैं सबको अपने साथ॥
द चरण पादुका प्रभो ! कृपा के धाम।
इनसे गर्वोन्नित होगा नन्दीग्राम॥
मैं नन्दि ग्राम में रह कर चोदह वर्ष।
बन कर विरक्त तज चिन्ता एवं हर्ष॥

कर राम पादुकाओं का नित पूजन।
आराध्यदेव का करके आराधन॥
कर दूँगा नाथ! चतुर्दश वर्ष व्यतीत।
दिन ही होंगे मुझको युग तुल्य प्रतीत॥
यदि अवधि बीतने पर आयेंगे आप।
मिट जायेगा मेरे मन का संताप॥
यदि नहिं आयेंगे हे रघुकुल के नाथ।
जीवित जल जाऊँगा सामधा के साथ॥
यह कह कर रोने लगे भरत महाराज।
रोने लग गया अवध का सर्व समाज॥
माता कौशल्या जब हो गयीं अधीर।
कैकेयी सुमित्रा लगीं बहाने नीर॥
बोले तब मर्यादा पुरुषोत्तम राम।
प्रिय बन्धु भरत! तुम हो निर्मल निष्काम॥
क्यों होते हो भय्या तुम शोकाकुल।
मत करो अवध के सुजनों को व्याकुल॥
बीतेंगे जिस दिन वन के चौदह वर्ष।
मैं उसी दिवस आऊँगा वहाँ सहर्ष॥
तुम रखो हृदय में यह विश्वास अटल।
मैं नहीं करूँगा तुमसे कोई छल॥
आऊँगा निस्संशय मैं नन्दी ग्राम।
ले चलना मुझको तुम्हीं अवधपुर धाम॥
यह सुन कर किया भरत ने उन्हें प्रणाम।
उठ खड़े हुए करुणा निधान श्री राम॥
लेलिया भरत को गोद बीच सस्नेह।
देखा सबने हैं एक प्राण दो देह॥

कह उठे सभी जय जय रघुकुल मणि राम।
जय भरत महात्मा जय लक्ष्मण बलधाम॥
जय जनक नन्दिनी सती शिरोमणि धन्य।
जय चित्रकूट जय कामदपर्वत धन्य॥
जय राघवेन्द्र कौशल्या नन्दन राम।
करते हैं हम सब श्रद्धा सहित प्रणाम॥
जब करते थे जय घोष अवध के जन।
श्री राघवेन्द्र ने सबको किया नमन॥
गुरु वसिष्ठ को नत होकर किया प्रणाम।
फिर माताओं का वन्दन कर अविराम॥
बोले धर्मज्ञ शत्रुहन से सस्नेह।
रिपुहन ! माताओं को पहुंचाओ गेह॥
चल दिए भरत शत्रुहन अवध की ओर।
कामद गिरि पर्वत था आनन्द विभोर॥
श्री राम चरण पादुका शीश पर धर।
चल रहे भरत थे शान्ति सुधा पीकर॥
गुरुदेव और माताओं को सादर।
कर रथारूढ़ महाराज भरत चल कर॥
मुड़ मुड़ कर कामद गिरि का कर दर्शन।
करते थे करुणा पूर्वक अभिवादन॥
फिर करते थे वे उत्तर को प्रस्थान।
पीछे करते थे गज रथ अश्व प्रयाण॥
सप्ताहों में वे पहुंचे नन्दी ग्राम।
वह बना भरत के आराधन का धाम॥
गुरुदेव अयोध्या में कर निर्देशन।
मंत्री मंडल में रख दृढ़ अनुशासन॥

साम्राज्य सुरक्षा का रख करके ध्यान।
योजना बनाते थे गुरुदेव महान॥
थे नन्दि ग्राम में भरत शत्रुहन धीर।
कामद गिरि पर थे श्री लक्ष्मण रघुवीर॥
जब चित्रकूट को त्याग चल दिये राम।
मिथिलेश नन्दिनी श्री लक्ष्मण बलधाम॥
ब्रह्मर्षि अत्रि के आश्रम में जाकर।
मर्यादा पुरुषोत्तम ने नत होकर॥
ब्रह्मर्षि अत्रि को करके अभिवादन।
अनसूया महासती को किया नमन॥
जब जनक नंदिनी ने किया प्रणाम।
बोलीं अनसूया धन्य जनकपुर धाम॥
मिथिलेश जनक से जहाँ अलौकिक भूप।
उनका तनया सीते! तुम सती अनूप॥
तुम सती सिरोमणि जनक नदिनी धन्य।
तुमसी न हुई नृप पुत्री कोई अन्य॥
मैं तुम्हें दे रही हूं जो कुछ उपहार।
तुमको वे सब करने होंगे स्वीकार॥
यह कह कर महासती ने दे उपहार।
कर सती शिरोमणि का अपूर्व सत्कार॥
मर्यादा पुरुषोत्तम को ममता युक्त।
सौमित्र वीर को प्रसन्नता संयुक्त॥
कदली पत्रों पर दिये कन्द फल मूल।
स्वादिष्ट मधुर पौष्टिक ऋतु के अनुकूल॥
कर फलाहार सीता लक्ष्मण श्रीराम।
ब्रह्मर्षि अत्रि को कर साष्टाङ्ग प्रणाम॥

दक्षिण के वन में हुए अग्रसर जब।
मिल गया विशाल विराध निशाचर तब ॥
श्रीराम और लक्ष्मण का कर अपमान।
फिर किया निशाचर ने आक्रोश महान ॥
तब राघवेन्द्र श्री लक्ष्मण ने तत्काल।
पापी विराध को दिया खड्ड में डाल ॥
फिर शिला डालकर किया त्वरित संहार।
मृत्तिका प्रस्तरों का भर अतिशय भार ॥
चल दिये असुर नाशक जग रक्षक राम।
मिथिलेश नंदिनी श्री लक्ष्मण बलधाम ॥
शरभंग महामुनि से कर क्षणिक मिलन।
देखा उनका सहसा परलोक गमन ॥
वे भस्मीभूत हुए कर अग्न्याधान।
यह देख रहे थे रामचन्द्र भगवान ॥
उत्सर्ग हो गये स्वेच्छा से शरभंग।
सीता ने देखा अति अनुपम अनुषंग ॥
आगे चलकर जब मिले महर्षि अनेक।
दिखलाया इनको दृश्य कारुणिक एक ॥
थे पड़े तपस्वी मुनियों के कंकाल।
असुरों ने खाकर माँस दिये थे डाल ॥
उनका अवलोकन कर बोले श्रीराम।
असुरों से करना है भीषण संग्राम ॥
मैं खोज खोज असुरों को दूँगा मार।
इस भारत भू का कर दूँगा उद्धार ॥
अब हो जावो हे तपस्वियों निर्भय।
असुरों का नाश करूँगा निस्संशय ॥

मांसाहारी न रहेंगे भूतल पर।
मद्यप मेरे द्वारा जायेंगे मर॥
मांसाहारी रजनीचर दल को मार।
मैं धर्म सनातन का करके उद्धार॥
जग को कर दूंगा दया स्नेह से युक्त।
अत्याचारों से अघ से करके मुक्त॥
त्यागी तपस्वियों चिन्ता का कर त्याग।
अब योग यज्ञ से करिये फिर अनुराग॥
इस भाँति प्रतिज्ञा करके सीतानाथ।
बढ़ चले सती सीता लक्ष्मण के साथ॥
मुनिवर सुतीक्ष्ण के आश्रम में रहकर।
कुछ दिवस किया सत्संग दिया यह वर॥
मैं फिर आऊँगा रखिये ये विश्वास।
यह कह आश्रम मंडल के पहुँचे पास॥
आश्रम मंडल में किया बहुत दिनवास।
दो मास किसी आश्रम में या छः मास॥
छः मास कहीं पर अथवा द्वादश मास।
कोई आश्रम में अर्धमास या मास॥
इस भाँति वर्ष जब द्वादश हुए व्यतीत।
तब हुई राम को यात्रा व्यर्थ प्रतीत॥
मुनियों से बोले राघवेन्द्र भगवान।
मैं करता हूँ हे तपस्वियों प्रस्थान॥
वनवास हमारा हो न जाय असफल।
रहजाय नहीं जीवित रजनीचर दल॥
चिन्ता अब यह मुझको हो रही विशेष।
नहिं हुआ पूर्ण मेरा प्रण या उद्देश्य॥

अतएव जा रहा हूँ दडक वन बीच।
मिल जायँ वहाँ यदि असुर नराधम नीच ॥
तो कर दूँ मैं उनका सत्वर संहार।
इस पुण्य भूमि का हो जावे उपकार ॥
यह कह आश्रम मंडल से कर प्रस्थान।
कर चले मैथिली पति राघव भगवान ॥
मुनिवर सुतीक्ष्ण से पुनः मिले जाकर।
फिर चले अगस्त्याश्रम को वे सत्वर ॥
पहुँचे मर्यादा पुरुषोत्तम आश्रम।
यह जान हुआ मुनियों को हर्ष परम ॥
उठ बैठे स्वागत को अगस्त्य भगवान।
श्री राघवेन्द्र का कर सहर्ष सन्मान ॥
बोले हे मर्यादा पुरुषोत्तम राम।
धर्मोद्धारक अघ नाशक अति अभिराम ॥
आगे है उत्तम पंचवटी का स्थल।
बहता सरिता का निर्मल जल कलकल ॥
जब आप करेंगे वहाँ कुछ समय वास।
तब वहीं करेंगे निशाचरों का नाश ॥
देता हूँ युद्ध हेतु मैं उत्तम वाण।
उत्तम धनु एवं अतुल प्रशस्त कृपाण ॥
यह कह सीतापति को कर शस्त्र प्रदान।
बोले फिर पूजनीय अगस्त्य भगवान ॥
सीता देवी की रक्षा का रख ध्यान।
करना होगा अब दक्षिण को प्रस्थान ॥
ले अतुल शस्त्र धर्मोद्धारक श्री राम।
मुनिवर अगस्त्य को कर सविनीत प्रणाम ॥

बढ़ गये बन्धु के और प्रिया के संग।
पथ में हो गया अपूर्व एक अनुषंग॥
देखा उनने जब गृद्ध एक सुविशाल।
कज्जल समान तन ग्रीवा चंचु कराल॥
था उसका नाम जटायु अतुल बलवान।
चेष्टा उसने की परिचित सुहृद समान॥
श्री राघवेन्द्र के समक्ष ग्रीवा धर।
रह गया गृद्ध अति शान्त मौन होकर॥
बोले मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम।
बतलाओ हे खग वर्य आप का नाम॥
बोला पक्षी मैं हूँ जटायु प्रख्यात।
राजेश्वर दशरथ का सुमित्र सुज्ञात॥
बोले राघव वे गये सुरों के धाम।
हम हैं उनके सुत लक्ष्मण एवं राम॥
मैं राम तुम्हें मानूँगा पूज्य समान।
पितृव्य तुल्य मैं सदा रखूँगा ध्यान॥
तुम अवधनाथ के मित्र और आत्मीय।
मेरे भी हो आत्मीय समादरणीय॥
चल पंचवटी में रहो हमारे पास।
कुछ काल करेंगे हम तुम वहीं निवास॥
आवो मैं करूँ तुम्हारा आलिंगन।
यह कह कर किया गृद्ध का परिरम्भण॥
बन गये पतित पावन सीता के नाथ।
वह गीध होगया राघवेन्द्र के साथ॥
जब पचवटी में पहुँचे श्री रघुवीर।
मिथिलेश सुता खग श्री सौमित्र सुधीर॥

निर्मित की लक्ष्मण ने दो पर्ण कुटीर।
था समीप ही गोदावरी नदी का नीर॥
जब एक कुटीं में रहे जानकी राम।
दूसरी कुटी में श्री लक्ष्मण गुण ग्राम॥
तब एक वृक्ष पर बैठा गृद्ध जटायु।
बहता था शीतल मन्द सुगन्धित वायु॥
करते थे क्रीड़ा क्रोञ्च हंस शुक मोर।
वक नीलकंठ टिट्टिभ कोकिला चकोर॥
आते थे गवय शशक मृग द्वादशशृंग।
पुष्पों पर मँडराते रहते थे भृंग॥
उस मनहर स्थल में बीते दिवस अनेक।
मध्यान्ह समय आ गई सुन्दरी एक॥
जब उसने किया जानकी का अपमान।
तब श्री लक्ष्मण ने काटे उसके कान॥
जब हुई नाशिका से भी दुष्टा हीन।
बह चलीं मुंड से शोणित धारा तीन॥
वह शूर्पनखा थी दुराचारिणी नीच।
रहती थी सेना ले दंडकवन बीच॥
लंकेश्वर रावण की भगिनी दुष्टा।
करती थी मदिरापान महा भ्रष्टा॥
कर हाहाकार गयी सेना के बीच।
थे सेनापति दूषण त्रिशिरा खर नीच॥
चौदह सहस्र थे राक्षस अति बलवान।
उन सबका कर शूर्पणखा ने आह्वान॥
करवाया भीषण रण के हित अभियान।
गूंजा नभ में गर्जन का रोष महान॥

जब असुर सैन्य आई करके गर्जन ।
ले धनुष वाण आये दशरथ नन्दन ।।
बन गये राम भगवान उस समय काल ।
चौदह सहस्र का वध करके तत्काल ।।
खर को दूषण को त्रिशिरा को भी मार ।
दी बहा भूमि पर अगणित शोणित धार ।।
लंका पहुची शूर्पणखा बनी कुरूप ।
बोली रावण से ओ जग विजयी भूप ।।
मैं बहिन आपकी नकटी बूची आज ।
दो दंड उन्हें जिन लूटी मेरी लाज ।।
दशरथ के पुत्र राम की सीता नारि ।
वह परम सुन्दरी पद्म तुल्य सुकुमारि ।।
आई है पंचवटी में पति के संग ।
उसके कारण ये अङ्ग हो गये भङ्ग ।।
लक्ष्मण है बन्धु राम का दुष्ट महान ।
उसने ही काट नाशिका काटे कान ।।
दूषण त्रिशिरा खर सेनाध्यक्ष प्रवीर ।
चौदह सहस्र सैनिक अपने रणधीर ।।
उन सबको दिया राम ने केवल मार ।
बच सका न एक हुआ सबका संहार ।।
तुमको देने सन्देश बचा कर प्राण ।
आयी हूं अब कर लूंगी महा प्रयाण ।।
नकटी बूची बन कर जीना धिक्कार ।
जीवित रहना अब मुझे नहीं स्वीकार ।।
बोला लंकेश्वर रावण कर गर्जन ।
प्रतिशोध हेतु मैं जाता हूँ इस क्षण ।।

मत करना आत्मघात का निन्दित कर्म।
नहिं आत्मघात से बढ़ कर के दुष्कर्म।।
मेरी प्रिय बहिन! रखो तुम दृढ़ विश्वास।
कर दूँगा राम लक्ष्मण का यश नाश।।
यह कह तत्क्षण उठ गया दुष्ट लंकेश।
ले लिया गगन जल थल रथ सङ्ग विशेष।।
ले संग महा मायावी खल मारीच।
जा पहुँचा पंचवटी में रावण नीच।।
मारीच बना कंचन का मृग तत्काल।
ले गया राम लक्ष्मण को भ्रम में डाल।।
रह गई जनक नन्दिनी अकेली जब।
ले गया उठा उनको पापात्मा तब।।
सुन कर सीता देवी का हाहाकार।
कर दिया गृद्ध ने आकर चंचु प्रहार।।
रावण के सिर को दिया चंचु से फोड़।
उसके धनु को भी तत्क्षण दिया मरोड़।।
तब लंकापति रावण ने ले करवाल।
काटे जटायु के प्रबल पंख तत्काल।।
ग्रीवा भी खण्डित हुई गिरा भूपर।
चल दिया दुष्ट तब सीता को लेकर।।
आये कुटीर में जब श्री लक्ष्मण राम।
देखा शूर्पणखा के अघ का परिणाम।।
कर गया हरण सीता का रजनीचर।
यह जान गये श्री राम स्तब्ध होकर।।
कर्तव्य मित्रता, रक्षण में संलग्न।
था मरणासन्न जटायु प्रतीक्षा मग्न।।

श्री राम राम रटता था गृद्ध सुभक्त।
आ गये राम भगवान स्नेह संयुक्त॥
ले लिया गोद में खग को ममता युक्त।
वह राम गोद में हुआ देह से मुक्त॥
यों राम भक्त के निकल गये जब प्राण।
रो उठे गृद्ध के वियोग में भगवान॥
बोले लक्ष्मण हे गृद्ध हुआ तू धन्य।
नहिं भाग्यवान होगा तुझ जैसा अन्य॥
तूने त्यागे सीता माता हित प्राण।
कर्तव्य हेतु कर दिया अमर बलिदान॥
तूने भगवान राम के हित तन त्याग।
अपना दिखलाया यह अनुपम अनुराग॥
फिर समिधाओं में अग्नि प्रज्वलित कर।
प्रिय जटायु का तन उसके ऊपर धर॥
श्री सीतापति ने बहा अश्रु की धार।
कर दिया मृतक भक्षक खग का उद्धार॥
फिर किया उन्होंने दक्षिण को प्रस्थान।
मिल गया मार्ग में एक पिशाच महान॥
राक्षस कबंध कर गर्जन कर्कश घोर।
आया श्री लक्ष्मण राघवेन्द्र की ओर॥
तब राघवेन्द्र ने कर के शर संधान।
पापी कबंध का कर डाला अवसान॥
स्वामिनी सती सीता का अनुसंधान।
करने को थे गतिशील राम भगवान॥
शबरी के सूखे फल खा कर उद्धार।
वे गये दूर दक्षिण में गिरि के पार॥

अगणित नदियों के पार शोक में मग्न।
गिरि और वनों को लांघ शोध संलग्न॥
पंपाशर की सीमा के आगे चल।
किष्किन्धापुर के पथ से गये निकल॥
जब ऋष्यमूक पर्वत के पहुंचे पास।
पार्वत वासी नेता हो गया उदास॥
वह बोला नीचे जाओ हे हनुमान।
वे कौन आरहे हैं दो बलवान॥
तेजस्वी हैं धनु तूणीरों से युक्त।
उनसे मिल कर करदो मुझको भ्रम मुक्त॥
ब्राह्मण बनकर नीचे उतरे हनुमान।
सविनय भगवान राम का कर सन्मान॥
पर्वत पर लेकर उन्हें गये सत्वर।
सुग्रीव मिले सीतापति से सादर॥
फिर राघवेन्द्र सुग्रीव मित्र बनकर।
प्रणबद्ध हो गये अग्नि निकट रख कर॥
व्यभिचारी बाली किष्किन्धा का भूप।
था अद्वितीय बलवान प्रवीर अनूप॥
था सुकंठ का भ्राता कुविचारी क्रूर।
सुग्रीव बन्धु को करके गृह से दूर॥
उसकी पत्नी से करता था व्यभिचार।
सुग्रीव दुखी था कर न सका प्रतिकार॥
निर्वासित हो पर्वत पर रह गृह हीन।
सब प्रकार से था दीन शक्ति से क्षीण॥
रक्षा का करते थे हनुमान सुकार्य।
वे थे योद्धा संग्राम शास्त्र आचार्य॥

थे ब्रह्मचर्य व्रत में अविचल अनुपम।
बलवान विश्व में हुआ न उनके सम॥
वे धर्म सत्य संयम के थे आदर्श।
नहिं करता था कोई उनसे संघर्ष॥
था भरा हुआ उनमें अतिशय संतोष।
आता था उनको नहीं किसी पर रोष॥
उनकी संगति से थे सुकंठ जीवित।
सुन कर भगवान राम हुए दुःखित॥
प्रण किया उन्होंने न्याय युक्त अविचल।
बाली है अन्यायी व्यभिचारी खल॥
उसका वध करना है अब अनिवार्य।
पापी को क्षमा न कर सकते हैं आर्य॥
जब क्षुब्ध हो गये रामचन्द्र भगवान।
तब किया नराधम बाली का अवसान॥
बाली को मारा राघवेन्द्र ने जब।
आये सुकंठ किष्किन्धापुर में तब॥
श्री लक्ष्मण ने किष्किन्धा में किया प्रवेश।
उनकी आज्ञा से बने सुकंठ नरेश॥
सुग्रीव हुए जब किष्किन्धा के भूप।
बाली सुपुत्र अंगद युवराज सुरूप॥
श्री जामवन्त की सम्मति को स्वीकार।
उड़ कर हनुमान गये समुद्र के पार॥
लंका में जनक नन्दिनी से मिलकर।
आयेंगे अब भगवान राम कह कर॥
बोले सीता माता से फिर हनुमान।
पापी रावण का होगा अब अवसान॥

माता तुम सती शिरोमणि हो अनुपम।
रावण ब्राह्मण कुल कलंक अधमाधम॥
देता हूँ अब उसको मैं निज परिचय।
सर्वथा आप रहना प्रसन्न निर्भय॥
यह कह कर सीता को कर त्वरित प्रणाम।
ले राघवेन्द्र भगवान राम का नाम॥
बन गये त्वरित वे कपि विशाल विकराल।
विध्वंस कर दिया एक भवन सुविशाल॥
फिर उलट पलट कर दिया अशोकोद्यान।
सब दिये उखाड़ वहाँ के वृक्ष महान॥
मारे जब उनने द्वारपाल निश्चर।
अति क्षुब्ध हुआ रावण यह सब सुनकर॥
भेजे उसने योद्धा बलवान अनेक।
मारा हनुमान महाप्रभु ने प्रत्येक॥
मारा रावण का सुपुत्र अक्ष कुमार।
फिर दिये लाख योद्धा सेनापति मार॥
जब एक लाख मरगये लंक के वीर।
तब आया मेघनाद अतिरथी अधीर॥
उसके आगे बँध गये स्वयं हनुमान।
वे पवन पुत्र वज्राङ्ग देव भगवान॥
अपमान कर रहे थे रजनीचर नीच।
वज्राङ्ग देव का लंका के पथ बीच॥
किन्तु सहन कर असुरों का अपमान।
मन ही मन में हर्षित थे श्री भगवान॥
समझते थे वे मन में होकर अतिशय शांत।
लंका के रजनीचर हैं मूढ़ नितान्त॥

ले गया असुर उनको रावण के पास।
वे बोले रावण होगा तेरा नाश ॥
सीता को लाया है तू बन कर चोर।
बन गया अपराधी तू राघवेन्द्र का घोर ॥
अरे ! अब भी कर दे सीता प्रत्यावर्त्तन।
क्षमा कर देंगे तुझको श्री दशरथ नन्दन ॥
पढ़े हैं तूने आगम एवं चारों वेद।
जानता है तू वेदों के सब ही भेद ॥
तुझ जैसा हुआ न होगा अति विद्वान।
पर मद्य मांस खा बना पिशाच महान ॥
पीकर मदिरा हो गई बुद्धि ही भ्रष्ट।
रे ब्राह्मण कुल कलंक ! तू होगा नष्ट ॥
तेरा वध करने आयेंगे रामचन्द्र भगवान।
लंका नगरी बन जावेगी रे मतिमन्द श्मशान ॥
यह सुनकर वज्रांङ्गदेव का स्पष्ट सत्य उपदेश।
लंकाधीश होगया सत्वर क्रोधोन्मत्त विशेष ॥
मृत्युदंड का त्वरित दे दिया हनुमत हित आदेश।
किन्तु विभीषण की विनती पर किया और निर्देश ॥
मृत्यु दण्ड मत दो यह कपि है करदो पूंछ विहीन।
पूंछ जलाकर पीड़ित करदो बन जायेगा दीन ॥
महावीर बोले मैं कपि नहिं बना लिया कपि रूप।
पवन देव का औरस सुत हूँ ओ लंका के भूप ॥
वज्रअंग हनुमान कर गये यद्यपि सत्य कथन।
तथापि मदिरा के वश रावण समझा नहीं वचन ॥
पूंछ जलाने चले निशाचर किन्तु होगया और।
वज्रअंग भगवान कर चले अग्निकांड अति घोर ॥

समस्त लंकापुरी उन्होंने जला किया प्रस्थान।
समुद्र उलंघन कर लौटे पुनः राम के स्थान॥
किष्किन्धा के पास प्रश्रवण पर्वत पर हनुमान।
पहुँचे देख हुए अति हर्षित, रामचन्द्र भगवान॥
साष्टाङ्ग दण्डवत प्रणाम कर, बोले पवन सुपूत।
कर आया हूँ राघवेन्द्र मैं, लंका भस्मीभूत॥
माता सीता से मिल कर मैं कर आया उत्पात।
एक लाख असुरों को मारा, चला चला कर लात॥
रावण का लघु पुत्र वीर था अद्भुत अक्षकुमार।
गगन युद्ध कर उस योद्धा का, कर डाला संहार॥
रावण के अनेक सेनापति, एकलाख रणधीर।
पदाघात मुष्टिक प्रहार से, दिया सभी को चीर॥
मृत्यु दंड का जब रावण ने, दिया मुझे आदेश।
तब उसके कनिष्ट बन्धु ने, दी मंत्रणा विशेष॥
सद्गुण गण से युक्त विभीषण, धर्म नीति से युक्त।
किया उन्हीं के परामर्श से, मृत्यु दंड से मुक्त॥
और दे दिया पूंछ जलाने का नृप ने आदेश।
मैंने भस्मीभूत लंक कर नृप गृह किया प्रवेश॥
रावण के अन्तःपुर को भी, करके शोभाहीन।
सीता माता के समक्ष मैं, बन कर अतिशय दीन॥
दे आया हूँ यह आश्वासन; हे माता! भगवान।
राघवेन्द्र सत्वर आयेंगे, करने युद्ध महान॥
रावण का, उसकी सेना का, करने को अवसान।
आयंगे दो मास पूर्व ही रामचन्द्र भगवान॥
पूछा श्री लक्ष्मण ने, पूंछ जलाने की क्या बात।
क्या हो गई लंक में मुझे नहिं हुई यह ज्ञात॥

पूंछ कहाँ लग गई आप को जन्तु नहीं थे आप।
समझाए वज्राङ्ग देव ? यह क्या था कार्य कलाप॥
लक्ष्मण की शंका का करने अंत हँसे हनुमान।
फिर बोले मैं बना लंक में था मार्जार समान॥
बिडाल बन कर घर घर घूमा सीता माता हेत।
फिर कपि बनकर पूर्ण कर लिया, वह पवित्र अभिप्रेत॥
कपि की पूंछ जला देने का रावण का उद्देश्य।
लंका दहन कांड का यह ही कारण हुआ विशेष॥
योग सिद्धियों से मैं हो जाता हूँ अन्तर्ध्यान।
ब्राह्मण बनता विडाल बनता, होता शैल समान॥
कपि बन कर लंका में मैं कर आया विध्वंस।
अति मदान्ध लंकापति का भी किया गर्व का ध्वंस॥
राघवेन्द्र भगवान प्रात ही अवश्य हो प्रस्थान।
बिता रही सीता माता हैं क्षण क्षण वर्ष समान॥
निराहार निर्जल तप करके, अश्रु बहा दिन रात।
शोक मग्न मन, अति कृश तन है, युग सम सायं प्रात॥
बोल चुके हनुमान महाप्रभु तब बोले भगवान।
चलो चलो वजांङ्ग देव कल ही कर दो प्रस्थान॥
मेरे हित मार्जार बन गये और बने कपि आप।
कर आये अति अवनत लंकापति का प्रबल प्रताप॥
कर सकता है कौन विश्व में ऐसे अनुपम कार्य।
नहिं कर सकते देव दैत्य या मानव आर्य अनार्य॥
मेरे बन्धु भरत लक्ष्मण शत्रुघ्न रहे लघु भ्राता।
आप जेष्ट भ्राता हो यह है स्पष्ट सूर्य सी बात॥
महारथी अतिरथी आप हैं वेद शास्त्र निष्णात।
जगकी समस्त विद्याएँ हैं, सभी आपको ज्ञात॥

श्रद्धा अरु अनुराग आप पर बढ़ते हैं अविराम।
आप तुल्य है नहीं विश्व में सत्यधर्म का धाम॥
अतिबल के तप ब्रह्मचर्य के, रवि हैं आप प्रचंड।
धर्म सनातन सद्गुणगण के, शशि हैं अतुल अखंड॥
किया आपने मेरे हित जो अतुल असंभव कार्य।
नहिं कर सकता उस प्रकार से, कोई आर्य अनार्य॥
इन्द्रादि देवताओं का जिसने किया घोर अपमान।
उस जगविजयी दुष्ट असुर को कर असमर्थ महान॥
उसकी एक लाख सेना अरु वीर पुत्र को मार।
आप सुरक्षित सकुशल आये हे विज्ञानागार॥
गगनयान बिन किया उड्डयन गये सिन्धु के पार।
शक्ति शौर्य संयम साहस के हो असीम आगार॥
किन शब्दों में करूँ आपका हे भ्राता! गुणगान।
समझ नहीं पड़ता मैं कैसे करूँ आज सन्मान॥
इतना कहदूँ आप बने मेरे संरक्षक वीर।
यह कहते बह निकला प्रभु के दिव्य दृगों से नीर॥
राघवेन्द्र के सुन करके अति पावन हृदयोद्गार।
बहती देखी उन नयनों से गंग यमुन की धार॥
महावीर हनुमान हो गये द्रवीभूत तत्काल।
रामचन्द्र के पद पद्मों पर अपना मस्तक डाल॥
बोले हे जग के रक्षक मर्यादा पुरुषोत्तम।
जीवन करता हूँ अर्पण मैं आराधक के सम॥
मेरे इष्टदेव! आप से बिना लिये उपहार।
किया करूँगा धर्म नाशकों का सदैव संहार॥
लंका में चलने को करिये कल अवश्य प्रस्थान।
सीता माता बिता रही हैं पल पल अब्द समान॥

निर्जल अनशन करके उनने बिता दिये हैं मास।
उन्हें मुक्त करना है सत्वर रावण का कर नाश।।
यह सुन महाव्रती लक्ष्मण ने होकर के गम्भीर।
नृप सुकंठ से कहा बुलाओ सब योद्धा रणधीर।।
किष्किन्धा की सब सेनाएँ हो जावें सन्नद्ध।।
सूर्योदय होते ही चल दें होकर के कटिबद्ध।।
खड़े हो गये किष्किन्धापति नृप सुग्रीव सुजान।
जाम्बवन्त से बोले करिये सेना का आह्वान।।
रजनी में ही किष्किन्धा में करके आयोजन।
कर देना है कल अवश्य ही रण के हेतु गमन।।
राघवेन्द्र भगवान रामको करके शीघ्र प्रणाम।
चले प्रश्रवण पर्वत से सुग्रीव भूप अविराम।।
जामबन्त सुग्रीव रात्रि पर्यन्त रहे सलग्न।
श्री अंगद नल नील निशा में थे कर्त्तव्य विमग्न।।
सेनापति सुषेण चिकित्सक कर सेना सन्नद्ध।
द्विविद मयन्द गव को गवाक्ष को किया शीघ्र कटिबद्ध।।
वीर गन्ध मादन के एवं ऋषभ पनस के साथ।
परामर्ष कर हुए सुसज्जित किष्किन्धा के नाथ।।
अंगद के नाना सुषेण थे सेनापति मतिमान।
आयुर्वेदाचार्य असम थे धन्वतरी समान।।
उन्हें बुलाकर कहा भूप ने रावण है दुर्दान्त।
उससे रण करने चलना है हो निर्भय निर्भ्रान्त।।
ले चलिये किष्किन्धा की औषधियों का भंडार।
सभी आहतों का करना होगा प्रतिदिन उपचार।।
निस्सन्देह आपका है उत्तर दायित्व महान।
सेना के रक्षक बन चलिये करिये शीघ्र प्रयाण।।
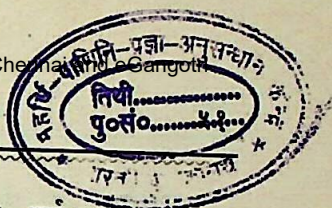
अस्तु हुआ जब सूर्योदय तब चले सर्व बलवान।
उतरे शैल प्रश्रवण से श्री रामचन्द्र भगवान।।
महाव्रती लक्ष्मण के पोछे चलते थे हनुमान।
महायुद्ध के हेतु सभी में था उत्साह महान।।
राघवेन्द्र भगवान राम का नभभेदी जयकार।
श्री अंगद युवराज हर्षमय करते बारम्बार।।
बढ़े जा रहे थे दक्षिण में महेन्द्र गिरि की ओर।
कहते थे सब है अति पामर रावण नारी चोर।।
उठा ले गया भारत की लक्ष्मी को रावण नीच।
उसको अवश्य ही मारेंगे सीतापति रण बीच।।
चलो चलो संग्राम करेंगे न्याय धर्म के हेत।
पूर्ण सफल तब ही होवेगा जीवन का अभिप्रेत।।
इस प्रकार उत्साह मग्न हो किष्किन्धा के वीर।
पहुंच गये दक्षिण भारत के महासिन्धु के तीर।।
मर्यादा पुरुषोत्तम राघव श्री सीतापति राम।
बोले श्री हनुमत से हे वज्राङ्ग देव बलधाम।।
किस प्रकार से चलें लंक में, एक लाख ये वीर।
अथाह हैं अतिशय प्रचंड है महासिन्धु का नीर।।
बोले हाथ जोड़ श्री हनुमत होकर के गम्भीर।
मेरे कन्धों पर चढ़ जावें मेरे प्रभु रघुवीर।।
एक स्कंध पर आप विराजें द्वितीय पर सौमित्र।
शत वीरों का करके बन्धन कटि में एक विचित्र।।
महेन्द्र पर्वत से उड़ कर के जाकर सागर पार।
उतार दूंगा पूर्ण सुरक्षित हे करुणा आगार।।
उड़कर नभ मंडल में विद्यु त गति से हे भगवान।
बार-बार सब को ले जाऊंगा, कर प्रबल उड़ान।।

महाव्रती श्री लक्ष्मण बोले, हे वज्राङ्ग महान।
निस्सन्देह आप सा जगमें है न एक बलवान॥
आप महात्मा हैं योगी हैं, हैं अनुपम विद्वान।
इस प्रकार का कार्य आप का होगा यह अपमान॥
बोल उठे तब जाम्बवन्त, ये नल हैं शिल्पाचार्य।
सेतु बांध देंगे समुद्र पर, अवश्य अरु अनिवार्य।
ब्राह्मण श्रेष्ठ विश्वकर्मा के सुत नल हैं मतिमान।
शिल्प शास्त्र का इन्हें पितासे प्राप्त हुआ है ज्ञान॥
बिना स्तम्भ का सेतु बांध देंगे अति सुदृढ़ महान।
उस पर चढ़ कर समस्त सेना कर देगी प्रस्थान॥
किष्किन्धा के वीरो जावो करो प्रबल उद्योग।
पर्वत के तरु प्रस्तर लावो जुट जाओ सब लोग॥
नृप सुकंठ ने किया समर्थन पा प्रभु का आदेश।
लाने लगे महेन्द्र शैल से सैनिक वृक्ष विशेष॥
कोई प्रस्तर कोई तरु लाते थे सैनिक वृन्द।
श्री गणेश कर दिया सेतु का, नल ने हो निर्द्वन्द॥
महेन्द्र गिरि से लंका तट तक बना सेतु सुविशाल।
नल का कौशल देख मुदित थे श्री सुकंठ भूपाल॥
नल को हृदय लगा कर बोले, रामचन्द्र भगवान।
तुम सा शिल्पाचार्य नहीं है तुम तो हो असमान॥
तदनंतर भगवान शंभु का पूजन कर भगवान।
राघवेन्द्र चढ़ गये सेतु पर और हुए गतिमान॥
महावीर हनुमान कर उठे जब प्रचंड जयकार।
राघवेन्द्र भगवान राम की जय ध्वनि अगणित बार॥
करके चले त्वरित लंका को किष्किन्धा के वीर।
करने को संग्राम हो रहे थे अत्यन्त अधीर॥

पहुँच गये लंका के तट पर महासिन्धु के पार।
किया सभी ने फिर नभ भेदी ध्वनि में जय जयकार ॥
राघवेन्द्र भगवान राम की जय जय का उद्घोष।
सुन कर लंका के रजनीचर चले तुरन्त सरोष ॥
लंकापति रावण से बोले हे लंका के नाथ।
राम और हनुमान आगये सेना लेकर साथ ॥
माल्यवन्त के साथ विभीषण बोले हे लंकेश।
लंका में कर गये आज हैं सीतानाथ प्रवेश ॥
उनका दूत यहाँ आया था, जब प्रचंड हनुमान।
किया अकेले हो था उसने रण विध्वंस महान ॥
स्वयं राम सेना लेकर के यहाँ आगये आज।
सर्वनाश लंका का होगा अवश्य हे महाराज ॥
सीता महासती देवी हैं, लौटा दें तत्काल।
विलम्ब करने से होवेगा महानाश विकराल ॥
रावण ने हो क्रोधमग्न मारी भ्राता को लात।
बोला मूढ़ विभीषण तू करता है भीषण घात ॥
निकल निकल बाहर जा कायर भ्राता द्रोही नीच।
तुझे नहीं अधिकार यहाँ रहने का परिषद बीच ॥
रावण के द्वारा जब ऐसा हुआ घोर अपमान।
चले गये तत्काल विभीषण कर संकल्प महान ॥
सीतापति भगवान राम के निकट गये तत्काल।
बोल उठे भगवान राम, हे लंका के भूपाल ॥
आवो आवो हे लंकापति स्वागत ममता युक्त।
रहो निकट मेरे सदैव अब चिन्ताओं से मुक्त ॥
यह कह कर भगवान राम ने निकट दिया सुस्थान।
किया विभीषण का लंकापति कह कर के सन्मान ॥

शरणागत को किया एक ही क्षण में सहसा धन्य।
नृपति विभीषण होंगे इसमें रहा विकल्प न अन्य॥
किष्किन्धा के नृप सुकंठ ने हर्षित हो दो बार।
किया विभीषण का लंकापति कह कर जय जयकार॥
अंगद नील और नल सबने जय जय कह सानन्द।
रावण बन्धु विभीषण को कर दिया पूर्ण निर्द्वन्द॥
छत्र मुकुट सिंहासन बिन ही बने विभीषण भूप।
राघवेन्द्र भगवान राम का अनुग्रह हुआ अनूप॥
फिर रामाज्ञा से वीरों ने किया प्रबल अभियान।
लंका की निश्चर सेना से कर संग्राम महान॥
किया रक्त रंजित पृथ्वी को मची अतुल हलचल।
लंका के कोने कोने में छाया कोलाहल॥
सेनापतियों को रावण ने भेज भेज प्रति दिन।
करवाया भगवान राम से युद्ध सुमति के बिन॥
कुमति हो गई थी रावण के मन में जब आसीन।
कैसे होता नहीं दुरात्मा विनाश के आधीन॥
रावण बन्धु अतुल बलशाली कुम्भकर्ण विकराल।
सोता था छः मास बिताता निद्रा में सब काल॥
एक दिवस ही जग कर खाता मृग अज महिष अनेक।
पीता था मदिरा के घट था किंचित नहीं विवेक॥
महाकाय था कज्जल सम था गज के तुल्य विशाल।
उसे देख यह भ्रम होता साक्षात यही है काल॥
सेना ले जब कुंभकर्ण ने किया घोर संग्राम।
उस पापी को चले मारने राघवेन्द्र श्रीराम॥
अपने अति प्रचंड बाणों से काटे उसके हाथ।
बहने लगा रुधिर कन्धों से अति द्रुत गति के साथ॥

क्रोध मग्न हो कुंभकर्ण ने करके लात प्रहार।
राम सैन्य के वध का मनमें किया विचित्र विचार॥
पदाघात करने को जब वह बढ़ा सैन्य की ओर।
किया गगन भेदी गर्जन रोमांचक कर्कश घोर॥
राघवेन्द्र भगवान रामने चला त्वरित दो वाण।
काटा मुंड असुर के तन से लगे निकलने प्राण॥
गिरा भूमि पर हुई प्रवाहित प्रचण्ड शोणित धार।
निकल गये तत्काल प्राण इस भाँति हुआ संहार॥
किष्किन्धा के वानर क्षत्रिय करते थे जयकार।
लंका के राक्षस करते थे अतिशय हाहाकार॥
महाव्रती श्री लक्ष्मण ने मारे अगणित खल नीच।
हुई प्रवाहित धार रक्त की युद्धस्थल के बीच॥
लंका के रजनीचर करते थे जब खड्ग प्रहार।
सीतापति की वानर सेना का करने संहार॥
तोमर भिन्दिपाल भाले या परशु धनुष असिवाण।
चला रहे थे लंकावासी शूल प्रचण्ड कृपाण॥
किन्तु राम सेना करती थी पाषाणों से युद्ध।
उठा उठा पाषाण फेंकते वानर होकर क्रुद्ध॥
वृक्षों की शाखाओं से भी करते थे संग्राम।
पापी असुरों के हित में होता था दुष्परिणाम॥
टूट रहे थे निशाचरों के क्षण क्षण अगणित रुंड।
फूट फूट कर रुधिर बहाते उन दुष्टों के मुंड॥
अंगद शरभ ऋषभ नल ने भी मारे अगणित नीच।
गवय गवाक्ष गंध मादन ने करी मेद की कीच॥
रावण की सेना के क्षत विक्षत थे लाखों मुंड।
टूट टूट गिर गये भूमि पर रुंड और भुजदंड॥

जाम्बवन्त का प्रोत्साहन पा लड़ते वानर वीर।
कुचल रहे थे राक्षस दल को वज्रअंग रणधीर॥
जब गर्जन करते थे हनुमत महावीर भगवान।
उस गर्जन से निशाचरों के कंपित होते प्राण॥
बहुत मास तक महायुद्ध में मरे करोड़ों वीर।
लंका की जनसंख्या घटकर हुए पिशाच अधीर॥
प्राचीरों को तोड़ तोड़ कर लेकर के पाषाण।
वानर फेंक फेंक हरते थे निशाचरों के प्राण॥
बहुत भवन लंका के करके वानर दल ने ध्वंस।
मदोन्मत्त रावण का करके गर्व सर्वथा भ्रंस॥
किष्किन्धा के वानर क्षत्रिय करते थे जयघोष।
जिसको सुनकर लंकाधीश्वर करता था आक्रोश॥
कोटि कोटि कट गये लंक के राक्षस अति बलवान।
मारे गये बहुत रावण के सेनाध्यक्ष महान॥
अपने अनेक पुत्रों के वध से हो शोक विमग्न।
रावण लंकाधीश हुआ अति, आर्तनाद संलग्न॥
अपने पिता नृपति रावण का, सुनकर करुण विलाप।
बोला मेघनाद सुर विजयी करके स्नेहालाप॥
लंकेश्वर! क्यों हुए आज यों आप शोक में लीन।
मुझे भूल क्यों गये सभी हैं सुर मेरे आधीन॥
इन्द्र लोक पर अमर लोक पर मेरा है आतंक।
आज राम का वध कर दूंगा, आप रहें निश्शंक॥
लक्ष्मण अंगद हनुमत का भी, कर दूंगा संहार।
अवश्य ही भारत की सब सेना को दूंगा मार॥
यह कह कर चल दिया त्वरित ही मेघनाद अति नीच।
अदृश्य होकर लगा फेंकने शस्त्र सैन्य के बीच॥

राम सैन्य पर उस पापी ने फेंके अगणित बाण।
मूर्छामग्न हो गये लक्ष्मण रामचन्द्र भगवान॥
अंगद नील द्विविद नल एवं गव गवाक्ष से वीर।
शरभ ऋषभ सुग्रीव तार भी और सर्व रणधीर॥
समस्त सेनापति मूर्छित हो गिरे रणांगण बीच।
रजनी हुई गया रण स्थल से मेघनाद अति नीच॥
रावण से बोला कर आया मैं सबका संहार।
राम और लक्ष्मण अंगद को दिया आज है मार॥
यह सुनकर अति पापी रावण हुआ हर्ष में मग्न।
रजनीचर हो गये हर्ष से मद्यपान संलग्न॥
दीपमालिका जैसा लंका में कर प्रखर प्रकाश।
लगे नृत्य करने रजनीचर, खा पशुओं का मांस॥
इधर शिविर से उठे विभीषण करने अनुसन्धान।
पहुंचे जहाँ अचेत गिरे थे रामचन्द्र भगवान॥
खोजा उनने जाम्बवन्त को, बोले चिन्तायुक्त।
कैसे हों भगवान राम श्री लक्ष्मण मूर्छामुक्त॥
समस्त सेना मरणोन्मुख है, सब ही हुए अचेत।
वैद्य सुषेण स्वयं मूर्छित हैं, कैसे हो अब चेत॥
जाम्बवन्त बोले यदि जीवित हों श्रीमद् हनुमान।
तो वे सब को उठा सकेंगे, करिये अनुसन्धान॥
उसी समय आगये वहीं वज्राङ्गदेव हनुमान।
बोले जाम्बवन्त भारत में करिये त्वरित प्रयाण॥
तीन प्रहर अब रात्रि और है, जा तेरह सौ कोस।
लाना है हिमगिरि में जाकर औषधियों का कोष॥
विशल्य करणी संधानी मृतसंजीवनी सुधा के तुल्य।
कंचन करणी औषधियाँ हैं, चारों अनुपम और अमूल्य॥

चारों औषधियों के पत्ते हैं दीपक के सम।
चारों एक स्थान पर ही होती हैं वे अनुपम॥
वह पर्वत रजनी में रहता पूर्ण प्रभा सम्पन्न।
उसमें ही चारो औषधियाँ, होती हैं उत्पन्न॥
ले आवें रजनी में तो बच सकते सबके प्राण।
सूर्योदय हो जाने पर होगा शरीर से त्राण॥
यह सुन कर उड़गये गगन में महावीर हनुमान।
दिव्य हिमालय में सत्वर ही गये सुनिश्चित स्थान॥
चारो औषधियों का अद्भुत लेकर पर्वत शृंग।
रजनी में हो ले आये हनुमान सुवर्ण सुअंग॥
राघवेन्द्र श्री लक्ष्मण अंगद नृप सुकंठ मतिमान।
औषधियों का प्रयोग होते उठे हुए बलवान॥
स्वस्थ हुए भगवान राम के समस्त भक्त सचेत।
जाम्बवन्त के परामर्श से, हुए त्वरित समवेत॥
किया उन्होंने लंका में सहसा प्रचण्ड संग्राम।
हुआ राक्षसों के हित भीषण अति घातक परिणाम॥
महाव्रती लक्ष्मण ने छोड़े जब प्राणांतक बाण।
महायुद्ध में मेघनाद के हुए पलायित प्राण॥
जब मर गया, धूर्त अति पापी मेघनाद बलवान।
मरे नरांतक देवांतक सुर अन्तक पाप निधान॥
मरे अकंपन शोणिताक्ष धूम्राक्ष और यूपाक्ष।
विद्यु जिव्ह शुकनाभ ह्रस्व दंष्टाभ नीच मकराक्ष॥
मारे गये महोदर रविरिपु रश्मिकेतु रणमत्त।
प्रहस्त विद्युद्रूप विघन हस्तिमुख मदोन्मत्त उन्मत्त॥
लंका के सब सेनापति रावण के पुत्र महान।
मारे गये हो गई लंका यम के लोक समान॥

चील गिद्ध लोमष श्रृगाल थक गये न खाते मांस।
सड़ने लगा द्वीप लंका का कठिन हो गये श्वास॥
रुंड मुंड भुजदंड पड़े थे, लंका में सर्वत्र।
सड़े शवों के ढेर लगे थे, यत्र तत्र अन्यत्र॥
उड़ती थी दुर्गन्ध पथों में अति असह्य अरु घोर।
चील गीध निष्क्रय बैठे थे थक कर चारों ओर॥
मृतकों में कीड़े होकर के गला मेद अरु मांस।
शोणित गलित सड़ित जल बनकर हुआ नर्क सविकाश॥
घोर नर्क बन गया लंक में घृणा होगई व्यस्त।
लोमष गृद्ध श्रृगाल भेड़िये थे अजीर्ण से त्रस्त॥
तब पापी रावण ने मन में किया कठोर विचार।
अब मेरे जीवित रहने में है असंख्य धिक्कार॥
मर मिटने में ही मेरा है सब प्रकार कल्याण।
किन्तु युद्ध करके त्यागूंगा अब मैं अपने प्राण॥
बचे खुचे असुरों को लेकर करने को संग्राम।
अस्त्र शस्त्र सज्जित हो करके गया जहाँ थे राम॥
युद्ध हुआ भगवान राम से कई दिवस पर्यन्त।
बड़ीकठिनता से पापी का किया राम ने अन्त॥
पड़े भूमि पर जब पापी के कट करके भुजदंड।
तब भगवान राम ने लंकापति का काटा मुंड॥
सीतापति भगवान राम का करने को सन्मान।
किया व्योम में देवगणों ने जय जय घोष महान॥
राज भवन में गये सुमित्रा नन्दन श्री हनुमान।
किया विभीषण का राज्योत्सव कर अतिशय सन्मान॥
लंका के सिंहासन पर जब गये विभीषण राज।
माल्यवन्त एवं सुपाश्व से शोभित हुआ समाज॥

थे लंकेश विभीषण के जितने लंका में भक्त।
राघवेन्द्र भगवान राम के गुणगण में अनुरक्त।।
कतिपय लंकावासी जो थे राम भक्त मतिमान।
उनने राघवेन्द्र का आकर किया समुद सन्मान।।
पृथ्वी पर गिर रामचन्द्र के चरणों पर धर शीश।
मर्यादा पुरुषोत्तम से पायी सबने आषीश।।
सती शिरोमणि जनक नन्दिनी का कर अति सन्मान।
शिविका में बैठा कर लाये लकापति मतिमान।।
लंकापति धर्मज्ञ विभीषण से बोले भगवान।
शिविका त्याग स्वयं ही आवे सीता मेरे स्थान।।
दो वर्षों के निर्जल अनशन से होकर बलहीन।।
सती शिरोमणि के तन पर था चीर महान मलीन।।
बहुत कठिनता से चल कर वे पहुँची पति के पास।
कृश तन था फिर भी सतीत्व का था अति दिव्य प्रकाश।।
कर प्रणाम भगवान राम को बोली करुणा युक्त।
महाव्रती लक्ष्मण तुम करदो मुझे कालिमा मुक्त।।
लगवा दो सौ दो सौ मन सूखे वृक्षों का ढेर।
और धधकता अग्नि काष्ट पर सत्वर ही दो गेर।।
आज्ञा पालन किया सती का, लक्ष्मण ने तत्काल।
सौ दो सौ मन काष्ठ मंगा कर दिया अग्नि को डाल।।
अल्प समय में हुई प्रज्वलित समिधा पूर्ण प्रबल।
लगीं धधकने सभी लकड़ियाँ था अति प्रखर अनल।।
तब बोलीं भगवती जानकी सुनलें सब मतिमान।
सतीत्व का परिचय मैं दूँगी करके कार्य महान।।
यह कहं कर के किया सती ने निर्भय अग्नि प्रवेश।
जाम्बवन्त अंगद सुकंठ को चिन्ता हुई विशेष।।

अग्निदेव हो गये प्रकट बोले होकर गम्भीर।
मर्यादा पुरुषोत्तम प्रभु हे राघवेन्द्र प्रणवीर॥
सीता सती शिरोमणि हैं निष्कलंक हैं निर्दोष।
पवित्र हैं मेरे समान यों, करता हूँ उद्घोष॥
दस सहस्र रावण भी होते तो होते असमर्थ।
सीता के सम्मुख रावण की थी सब प्रभुता व्यर्थ॥
कर नहिं सका सती सीता के सतीत्व का वह भंग।
जला न सकता मैं सीता को है अपूर्व अनुषंग॥
स्वागत करिये सती देवि का धर्मोद्धारक राम।
करता हूँ हे प्रभो आपको श्रद्धायुक्त प्रणाम॥
यह कह करके अग्निदेव ने, करके भुजाविशाल।
राघवेन्द्र के निकट सती को पहुँचाया तत्काल॥
खड़े हो गये स्वागत करने रामचन्द्र भगवान।
जनक नंदिनी की जय जय का गूंजा घोष महान॥
बैठ गईं जब जनक नंदिनी प्राणनाथ के पास।
वृद्धा त्रिजटा ने आकर के किया प्रणाम सहास॥
महाव्रती लक्ष्मण ने वैदेही को किया प्रणाम।
लगे पुष्प बरसाने सुरगण सुरपुर से अविराम॥
लंकाधीश विभीषण लाये अनुपम पुष्पक यान।
जनक नंदिनी सहित विराजे रामचंद्र भगवान॥
महाव्रती लक्ष्मण भी प्रभु के गये समीप विराज।
तब सुविशाल गदा ले बैठे श्री हनुमद महाराज॥
किष्किन्धापति नृप सुकंठ भी बैठे प्रभु के साथ।
बैठ गये प्रभु की आज्ञा से सहर्ष लंकानाथ॥
जाम्बवन्त नल नील द्विविद गव गवाक्ष अंगद वीर।
बैठ गये पुष्पक विमान में, वैद्य सुषेण सुधीर॥

नृप सुकंठ की आज्ञा से सेना ने किया प्रयाण।
तार गन्धमादन सेना के संग हुए गतिमान।।
ऋषभ शरभ पनसादि सैन्यपति किष्किन्धा की ओर।
सेना संग चले किष्किन्धा हो आनन्द विभोर।।
माल्यवन्त भी चले। अयोध्या लंकापति के संग।
तब विमान उड़ गया व्योम में कर स्थिरता को भंग।।
सिन्धु पार कर के किष्किन्धा पहुँचा पुष्पक यान।
किष्किन्धा की महिलाओं में उमड़ा हर्ष महान।।
राघवेन्द्र भगवान राम के दर्शन करने हेत।
अंगद जननी तारा आईं सफल हुआ अभिप्रेत।।
रुमा महारानी ने प्रभु को किया सभक्ति प्रणाम।
जनक नंदिनी का स्वागत कर लौट गई अविराम।।
उठा पुनः पुष्पक भूतल से हुआ तीव्र गतिमान।
किष्किन्धा से चला अयोध्या फिर से पवन समान।।
शृंगवेर पुर से निषाद गुह को लेकर श्री राम।
चले पुनः पुष्पक विमान से, बिन विलम्ब अविराम।।
नन्दि ग्राम में खड़े हुए थे बन्धु भरत महाराज।
राघवेन्द्र के स्वागत को वे अति आतुर थे आज।।
कहते थे मंत्री सुमन्त्र को नहिं आये भगवान।
उनके बिन मैं मृतक तुल्य हूँ वे हैं जीवन प्राण।।
समस्त जनता हुई सुशोभित उमड़ी दर्शन हेत।
स्वर्ग तुल्य हो गया सुशोभित पुष्पधाम साकेत।।
कोशलपुर साकेत अवधपुर पुरी अयोध्या नाम।
उसे प्रफुल्लित करने आये पुष्पक द्वारा राम।।
नन्दिग्राम में उतर गया जब मनहर पुष्पक यान।
बाहर आये स्नेह मग्न हो रामचन्द्र भगवान।।

जनक नंदिनी सती शिरोमणि सीता आई साथ ।
तब आये बाहर श्री लक्ष्मण सती उर्मिला नाथ ॥
देख भरत महाराज हो गये स्नेह सुरस में लीन ।
दौड़ चले प्रभु से मिलने को ममता से आधीन ॥
राघवेन्द्र के पद पद्मों पर रख कर दिव्य ललाट ।
बना दिया गंगा जमुना का उस ललाट को घाट ॥
दोनों नयनों से निकलीं गंगा यमुना की धार ।
राम पदों का प्रक्षालन कर हुईं पदों के पार ॥
राघवेन्द्र के नयनों से भी गिरे अश्रु के बिन्दु ।
मानो छलक रहा था नभ से राम कृपा का सिन्धु ॥
सींच रहे थे भरत राम के चरणों को सस्नेह ।
बरस रहा था उनके मस्तक पर सुर दुर्लभ मेह ॥
कुछ क्षण के उपरान्त राम ने लिया भरत को गोद ।
अवलोकन कर रहे सहस्रों जन थे भर कर मोद ॥
अवसर देख गिरे चरणों पर श्री शत्रुघ्न सहर्ष ।
रह न सका भगवान राम के आनन का उत्कर्ष ॥
दिया भरत को तब सीतापति ने तत्काल उतार ।
और शत्रुहन को गोदी में लेकर किया दुलार ॥
लक्ष्मण भरत हुए परिरंभित जब ममता से युक्त ।
राघवेन्द्र ने तब रिपुहन को किया हृदय संयुक्त ॥
लाखों कंठ कर उठे सहसा हर्षमग्न जयकार ।
राजेश्वर श्री रामचन्द्र की जय जय अगणित बार ॥
रत्न जटित कुंजर रथ पर जब हुए सुशोभित राम ।
राजेश्वरी जानकी शोभित हुईं राम के वाम ॥
प्रभु के दक्षिण में जब राजे, श्री लक्ष्मण बलधाम ।
चले संग में भरत महात्मा रिपुहद सदगुण ग्राम ॥

पीछे के रथ में शोभित थे महावीर हनुमान।
उनके कन्धे पर शोभित थी अनुपम गदा महान॥
एक सुरथ पर नृप सुकंठ थे अंगदादि के साथ।
और एक रथ पर थे शोभित लंका के नर नाथ॥
एक यान पर जाम्बवन्त थे श्री नल नील सुवीर।
द्विविद मयन्द गवय बैठे थे गवाक्ष से रणधीर॥
रामाज्ञा से चला गया नभ पथ से पुष्पक यान।
कोशलेन्द्र ने भेज दिया उसको कुवेर के स्थान॥
नंदि ग्राम से चले अयोध्या अवधनाथ भगवान।
समस्त रथ भी पीछे पीछे हुए त्वरित गतिमान॥
अगणित अश्व अग्रसर थे करते थे हिन हिन घोष।
जन समूह जय जय का करता था हर्षित उद्घोष॥
पुरी अयोध्या के नर नारी हर्ष मग्न थे आज।
बालक कहते थे ये आये रामचन्द्र महाराज॥
देखो देखो ये ही तो हैं अपने राजाराम।
कितने सुन्दर हैं मनहर हैं ये शोभा के धाम॥
पुरी अयोध्या में जब पहुँचा राघवेन्द्र का यान।
लाख लाख कंठों से निकला जय जय घोष महान॥
सदनों पर से बरस रहे थे मनहर मृदुल प्रसून।
पुष्प बृष्टि बढ़ती जाती थी, नहिं होती थी न्यून॥
राज द्वार पर रथ से उतरे राजेश्वर श्री राम।
उतरीं राजेश्वरी जानकी श्री लक्ष्मण बलधाम॥
माताओं को गुरु वसिष्ठ को प्रभु ने किया प्रणाम।
गुरु आज्ञा से राज तिलक का आयोजन अभिराम॥
करने लगे सचिव हर्षित हो उत्साहित अविराम।
विधि विधान से शुभ मूहूर्त में राजेश्वर श्री राम॥

दिव्य राज सिंहासन पर जब, राजे ललित ललाम।
सुर गण आये पुरी अयोध्या तज करके निज धाम॥
करने लगे तिलक मंत्रों से, गुरु ब्रह्मर्षि वसिष्ठ।
महर्षियों ने वैदिक मन्त्रोच्चारण किया विशिष्ट॥
राजमुकुट श्री रामचन्द्र के सिर पर रख ब्रह्मर्षि।
आनंदित हो गये स्वस्त्ययन करने लगे महर्षि॥
तब प्रधानमंत्री सुमंत्र ने करके पाँच प्रणाम।
कहा अमर हों राजेश्वर सम्राट हमारे राम॥
राजेश्वरी जानकी होवें स्वस्थ रहें सकुशल।
महाराज लक्ष्मण जनता को करते रहें सबल॥
महावीर वज्राँङ्गदेव हनुमान पधारे आज।
शोभित है इनसे अतिशय कोशल का राज समाज॥
लंकाधीश विभीषण का स्वागत करके सोत्साह।
कैसे किष्किन्धापति का स्वागत हो सुयश अथाह॥
महाराज सुग्रीव और अंगद युवरान प्रवीर।
द्विविद मयन्द सैन्यपति आये यहाँ अतुल रणधीर॥
वैद्यशिरोमणि श्री सुषेण का स्वागत ममता युक्त।
कभी न होंगे आप अवध के स्नेह पाश से मुक्त॥
ऋणी आपके हम सब हैं हे महावीर हनुमान।
नहीं विश्वमें परोपकार रत होगा आप समान॥
पूजनीय हैं वंदनीय हैं नभ के तुल्य महान।
नहिं होसकता पूर्ण आपके सद्गुण गण का गान॥
महावीर वज्राङ्ग देव हनुमत का कर सन्मान।
करके बैठे प्रधान मंत्री श्री सुमंत्र मतिमान॥

राजेश्वर के समक्ष आये भरत स्नेह के सिन्धु।
कर साष्टाङ्ग प्रणाम दंडवत गिरा अश्रु के बिन्दु ।।
बोले भगवन् मेरे कारण सहे आपने कष्ट।
कभी न होगी मेरे मन की महाग्लानि ये नष्ट ।।
त्याग अयोध्या को वन वन में किया आपने त्रास।
मेरे मन की इस अशान्ति का नहिं होसकता नाश ।।
यह सुन कर के खड़े हो गये रामचन्द्र भगवान।
वक्षस्तल से लगा भरत को किया अतुल सन्मान ।।
फिर बोले भगवान हो गईं माँ कैकेयी धन्य।
तपस्वियों का हित उन जैसा कौन करेगा अन्य ।।
नहिं करतीं माता कैकेयी वन में मेरा वास।
वन के तपस्वियों का कैसे कौन मिटाता त्रास ।।
तुममें भय्या भरे हुए हैं न्याय और अनुराग।
तुमने भी तो किया सुखों का मेरे हित ही त्याग ।।
तुमको जो दोषी मानेगा होगा अघी महान।
तुम निर्मल निस्वार्थ पुरुष हो मेरे प्राण समान ।।
सुन करके सम्राट राम के स्नेह युक्त मृदुबैन।
अवधपुरी के सज्जन गण के सजल हो गये नैन ।।
सबने मिल कर राजेश्वर का किया तुमुल जयकार।
उमड़ रहा था पुरजन के हृदयों में हर्ष अपार ।।
परम पूज्य गुरु मुनि वसिष्ठ को करके पांच प्रणाम।
अन्तःपुर में गये अवधपति राजेश्वर श्री राम ।।
राजेश्वर आये जब माता कौशल्या के पास।
राजेश्वरी जानकी आयीं माता हुईं सहास ।।
माता कैकेयी के चरणों पर धर कर के शीश।
बोले मर्यादा पुरुषोत्तम माता दो आशीष ।।

नहीं भेजतीं आप मुझे यदि आज्ञायुक्त अरण्य।
महा दुष्ट रावण का वध कर मैं नहिं होता धन्य॥
मात सुमित्रा के पद पद्मों पर धर करके माथ।
बोले मर्यादा पुरुषोत्तम अति ममता के साथ॥
मेरी स्नेहमयी माँ तुम हो आदर्शों की खान।
त्याग और कर्तव्य तुम्हारे जग में हैं असमान॥
दिवस गया आगई निशा हो गये प्रज्वलित दीप।
ले आये शत्रुघ्न सकल स्वजनों को राम समीप॥
राजद्वार में बजते थे दुन्दुभी पणव मृदुअंग।
करती थीं शतघ्नियाँ बीच में उनकी ध्वनि को भंग॥
दीप मालिकाओं से शोभित हुए भवन प्रत्येक।
ध्वजा पताकाओं से वंचित रहा नहीं गृह एक॥
द्वार द्वार पर शोभित थे सुन्दर कदली के स्तम्भ।
राज भवन में हुआ हर्षमय प्रीतिभोज आरम्भ॥
आनन्दित थे भरत सजीं चौकियाँ रजत के थाल।
था अति शोभित स्वजनों से वह भव्य भवन सुविशाल॥
राघवेन्द्र भगवान रामके समीप थे हनुमान।
लंकाधीश विभीषण एवं माल्यवन्त मतिमान॥
किष्किन्धापति नृप सुकंठ अंगद नल नील मयन्द।
गवय गवाक्ष द्विविद आदिक सब रामभक्त सानंद॥
वैद्य शिरोमणि सुषेण एवं जाम्बवन्त विद्वान।
हुए सुशोभित राम निकट जब सुर समुदाय समान॥
सह न सके सीतापति श्री लक्ष्मण का वहाँ अभाव।
उनकी अनुपस्थिति का था सबही पर मौन प्रभाव॥
गये हुए थे श्रीलक्ष्मण उर्मिला सती के पास।
किया सती ने था चौदह बर्षों एकान्त निवास॥

महासती का महाव्रती का वह अति दीर्घ वियोग।
आज व्यतीत हुआ फिर आया शुभ दर्शन का योग॥
मिले प्रियतमा से प्रियतम परिरंम्भित हो सस्नेह।
वह सुख कर संयोगदेख कर धन्य हुआ वह गेह॥
निकट आगये राजेश्वर के जब लक्ष्मण महाराज।
आनन्दित होगया रामभक्तों का सर्व समाज॥
माता कौशल्या जब आईं सबने किया प्रणाम।
श्रद्धा से परिपूर्ण हो गया वह शोभामय धाम॥
रजत थाल छप्पन भोगों छत्तीस व्यञ्जनों युक्त।
शोभित थे सब के समक्ष जल पात्रों से संयुक्त॥
बोले तभी विभीषण से श्री राघवेन्द्र अवधेश।
प्रसन्न हो करिये अहार हे न्यायमूर्त्ति लंकेश॥
बोले लंकाधीश विभीषण प्रथम कीजिये आप।
राघवेन्द्र ने कहा मैं नहीं प्रथम करेंगे आप॥
मेरे इन आत्मीयों में हैं आप विप्र श्रद्धेय।
सन्मानित हों ब्राह्मण यह मेरे जीवन का ध्येय॥
यह सुनकर लंकेश विभीषण करने लगे अहार।
तब वज्राङ्ग देव से बोले राम कृपा आगार॥
देख रहे हैं क्या अब करिये महावीर भोजन।
आप कर चुके पार व्योम को अष्ट शतक योजन॥
किष्किन्धापति क्यों करते हैं आप विशेष विलम्ब।
जाम्बवन्त अंगद नल मब ही करें त्वरित आरम्भ॥
देर कर रहे क्यों सुषेण हे आयुर्वेदाचार्य।
बहुत आहतों की रक्षाका किया अपने कार्य॥
जाम्बवन्त बोले हम सबके आप एक आधार।
आप करें आरंभ हमारा तब होगा आहार॥

यह सुनकर भगवान राम नें मँगवाये दो थाल।
बंधु भरत रिपुहन को बैठा दृष्टि स्नेह की डाल॥
करने लगे अहार स्नेह में समस्त जन थे मग्न।
प्रीति भोज में हुए प्रीतिमय रामभक्त संलग्न॥
माता कौशल्या करतीं थीं अवलोकन सस्नेह।
चारों पुत्र समीप देख पुलकित होती थी देह॥
राज द्वार पर बजते थे पणवानक दुन्दुभि वाद्य।
गोमुख रणसिंहे शहनाई ढोल नफीरो आद्य॥
गृह गृह द्वार द्वार शोभित थे अशोक पल्लव युक्त।
कोटि कोटि दीपक प्रदीप्त थे प्रकाश से संयुक्त॥
दीप मालिका कोशलपुर में थी अति शोभायुक्त।
आज हुआ था भारत सारे दुःख द्वन्द्वों से मुक्त॥
लक्ष्मी माता सीता थी थे विष्णु राम भगवान।
उन्हें प्राप्त कर नगर अवधपुर था अति शोभामान॥
इन्द्र कुबेर वरुण आये थे परिवर्तित कर रूप।
सृष्टि रचयिता ब्रह्मा आये अदृश्यमान अनूप॥
स्वयं स्वर्ग बन गई अयोध्या जहाँ नृपति थे राम।
जहाँ आगये थे श्री लक्ष्मण महाव्रती बलधाम॥
जहाँ भरत से महापुरुष थे सद्‌गुण गण के ग्राम।
महारथी शत्रुघ्न जहाँ थे शोभागार ललाम॥
वही अयोध्या आज होगई थी आनन्दागार।
उमड़ रहा था हर्ष वहाँ पर था उत्साह अपार॥
गोरी हमीर जयजयवन्ती वागेश्वरी विहाग।
बजा रही थीं शहनाई संगीत शास्त्र के राग॥
कहीं नफीरी पर काफी की छिड़ी हुई थी तान।
वाणा कहीं बज रही थी झंकारमयी छविमान॥

कहीं राग कल्याण गूंजता था एवं केदार।
मालकोश अंगड़ाई लेकर आया था साकार॥
बीती निशा दिवाकर आये गूंजा भैरवराग।
बोल रहे थे वृद्ध हमारे जाग गये अब भाग॥
उदयभाग्य हो गया हमारा यहाँ आगये राम।
यहाँ उपस्थित सदा रहेंगे मोक्ष धर्मधन काम॥
कहा किसी ने सुनो राम नृप नहीं, विष्णु भगवान।
राजेश्वरी जानकी को लो लक्ष्मी माता मान॥
बोला कोई अरे सोहना कहाँ जा रहा आज।
बालक बोला जहाँ हमारे अवध नाथ महाराज॥
इस प्रकार से अगणित बालक हुए वहाँ समवेत।
राघवेन्द्र श्री राम जहाँ थे दर्शन देने हेत॥
दर्शन करके बालक करने लगे प्रबल जयकार।
अमर रहें राजेन्द्र हमारे कहते बारम्बार॥
गान कर चुके थे भैरव अरु आसावरी विभास।
करती थी भैरवी रागनी अपना पूर्ण विकास॥
राम राज्य में रहा कहीं भी कोई नहीं अभाव।
बिना यत्न ही स्वयं हुआ था सबका शान्त स्वभाव॥
कामी क्रोधी कपटी लम्पट कहीं नहीं था एक।
ग्राम-ग्राम गृह-गृह में ही था सद्गृहस्थ प्रत्येक॥
थीं समस्त नारियां पतिव्रता सतीधर्म में लीन।
था अखंड भारत का शासन रामराज्य आधीन॥
नहीं धूर्त थे नहीं दस्यु थे कहीं नहीं था चोर।
ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र थे बंधे प्रेम की डोर॥
ईर्ष्या द्वेष कहीं न तनिक था, और न वैर विरोध।
दाव नहीं था घात नहीं था, और न था प्रतिशोध॥

मांसाहारी एक नहीं था, कहीं न मदिरा पान।
धन वैभव का नहीं किसी को था किंचित अभिमान ॥
पर स्त्री गामी न एक था पाखंडी नहिं एक।
सबके मस्तिष्कों में भरा हुआ था सत्य विवेक ॥
असत्य भाषण को सब ही बतलाते थे अपराध।
राम राज्य में बढ़ी सत्य पर श्रद्धा अतुल अगाध ॥
ऋषि मुनि योगी यती तपस्वी करते थे नित होम।
वैदिक मंत्रों से होता था प्रतिध्वनित नित व्योम ॥
सन्ध्या वन्दन सब ब्राह्मण करते थे सायं प्रात।
दिव्य दिवस होते जगमग होती दीपों से रात ॥
गृह-गृह में गायें देती थीं दूध सुधा के तुल्य।
अभ्यागतों अतिथियों को करते प्रदान बिन मूल्य ॥
दूध दही था विपुल गृहों में और मृदुल नवनीत।
खाते और खिलाते थे सब सुजनों को सप्रीत ॥
तंदुल यव गोधूम उड़द के थे गृह-गृह भंडार।
स्वर्ण रजत के पात्र वहाँ थे रत्नों के आगार ॥
राघवेन्द्र सम्राट राम से लेकर के आदेश।
विदा हुए महाराज विभीषण महामहिम लंकेश ॥
किष्किन्धा पति नृप सुकंठ भी अंगदादि के संग।
रामाज्ञा से हुआ विदा था करुणा का अनुषंग ॥
किन्तु रह गये कोशलपुर में महावीर हनुमान।
कैसे उनको जाने देते रामचन्द्र भगवान ॥
राम स्नेह में लीन हुए थे वज्रअङ्ग हनुमान।
उनकी ममता में तन्मय थे अवधनाथ भगवान ॥
यदि हनुमान दूध थे तो गंगा जल थे श्री राम।
दोनों ही थे एक किन्तु दो देह और दो नाम ॥

दूध और जल मिल जाते हैं हो जाते हैं एक।
राम और हनुमान स्नेह से स्वयं हो गये एक ।।
लक्ष्मण भरत शत्रुहन थे श्री राम भक्ति में लीन।
समस्त भारत की जनता थी रोग शोक से हीन ।।
स्वार्थ त्याग कर देता था, परहित में जन प्रत्येक।
मीन माँस भक्षक नर कोई वहाँ नहीं था एक ।।
मदिरालय भी कहीं नहीं था नहीं द्यूत का कर्म।
भूमंडल में व्याप्त हो गया सत्य सनातन धर्म ।।
चन्द्रमुखी सुन्दरी कन्यका नारी थी प्रत्येक।
कलहकारिणी कुलटा फूहड वहाँ नहीं थी एक ।।
धनुष वाण. लेकर चलते थे समस्त क्षत्रिय वीर।
भाले खड्ग कृपाण चमत्कृत रखते वे रणधीर ।।
स्वाभिमान सब में था किन्तु न था मिथ्या अभिमान।
मीन मांस भक्षण मदिरा का कहीं नहीं था स्थान ।।
रामराज्य में सत्य अहिंसा का था पूर्ण प्रभाव।
मनोनिग्रही सब ब्राह्मण थे सात्विक शान्त स्वभाव ।।
चंचल मन को स्थिर रखते थे करके प्राणायाम।
द्रव्याधीश वणिक भी करते थे प्रतिदिन व्यायाम ।।
वीतराग थे ऋषि मुनि ब्राह्मण वेदों के विद्वान।
रहते थे पावन स्थानों में करके जप तप ध्यान ।।
नेत्रों में लज्जा रखती थी वहाँ नारी सर्वत्र।
राम राज्य में सर्प नकुल भी रहते थे एकत्र ।।
मद मत्सर का काम क्रोध का करते सभी दमन।
कमल तुल्य सुन्दर बालक थे सदा प्रफुल्लित मन ।।
थाल भरे खाते थे मोहनभोग खीर सब नित्य।
रक्तपात संघर्ष कलह के कभी न होते कृत्य ।।

चील काक भी त्याग चुके थे कर्कशता के काम।
संरक्षक थे सब जीवों के करुणानिधि श्री राम॥
वहाँ कहाँ सुनने को मिलता हत्यारे का नाम।
तज कर चले गये भारत को दुर्गुण दुष्परिणाम॥
बीत गये थे वसुन्धरा के असुर निशाचर नीच।
सज्जन सती सुशील हो गये निर्भय भूतल बीच॥
सोनभद्र गंगा यमुना नर्मदा सिन्धु के कूल।
अमल स्वच्छ अति शोभा मय थे कहीं न कंटक शूल॥
ठाकुर शब्द नहीं प्रचलित था क्षत्रिय था विख्यात।
ईख न कहता था कोई था इक्षु नाम प्रख्यात॥
सब की भाषा संस्कृत हो थी नहीं कहीं अपभ्रंश।
विद्याभ्यासी सब थे नहीं कहीं मूढ़ता अंश॥
कृपा निर्बलों पर रखते किन्तु न था निर्बल एक।
मीन मेष मृग शशक सुरक्षित रहता था प्रत्येक॥
अरुणोदय होते ही सब करते थे प्रभु का ध्यान।
ग्रहण नहीं करते कदापि थे परधन एवं धान॥

वीर छन्द

सम्मुख रख हनुमान मूर्ति या चित्र शुद्ध जल से कर स्नान।
इस आदर्श कथा का प्रतिदिन पाठ करेंगे जो मतिमान॥
उनके जीवन में न रहेंगे पाप ताप द्विविधा या द्वन्द।
रोग शोक चिन्ता विनष्ट हो प्राप्त करेंगे परमानन्द॥

मदिरा मांस और परस्त्री का नहीं करेंगे जो उपभोग ।
नहीं करेंगे धूम्रपान भी असत्य या अपशब्द प्रयोग ।।
प्रसन्न उनपर ही होवेंगे श्री वज्राङ्ग देव भगवान ।
जीवन सफल सर्व विधि होगा अवश्य ही होगा कल्याण ।।
राघवेन्द्र भगवान राम के पद पद्मों में हो अनुरक्त ।
बाल्मीकि रामायण का यह सार किया मैंने अभिव्यक्त ।।
पाठ यदि प्रति दिन करेंगे राम के सद्भक्त सब ।
आदर्श रामायण करेगा धर्म का आलोक तब ।।

इति

स्वामी रामचन्द्र वीर

मार्ग शीर्ष शुक्ला ४ सं० २०२८ विक्रमी
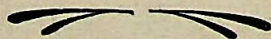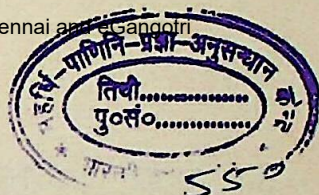
महाकवि मृत्युञ्जय

महात्मा रामचन्द्र वीर

के

नव जीवन और शक्ति स्फूर्ति प्रदान करने वाले ग्रन्थ

---

१. श्री राम कथामृत

मर्यादा पुरुषोत्तम पतित पावन दुष्ट दल संहारक भक्त वत्सल भगवान श्री राम की परम पवित्र कथा का अमृत, श्री मद्बाल्मीकीय रामायण के आधार पर हिन्दी भाषा का सबसे बड़ा महाकाव्य महाकवि मृत्युञ्जय महात्मा रामचन्द्र वीर महाराज की अमृतमयी जीवन दायिनी रचना श्री रामकथामृत महाकाव्य ११०० पृष्ठों का बड़े आकार का महान् ग्रंथ पढ़ कर उसे गा कर उसकी कथाएं औरों को सुना कर हिन्दी, हिन्दू और हिन्दुस्तान का अभ्युत्थान कीजिये। रामकथामृत को पढ़ कर आपका जीवन सफल हो जायगा। उसे पढ़ कर आपकी पत्नी आदर्श महिला बन जायगी। आपके पुत्र सुपुत्र बनेंगे। हिन्दी के इस सबसे बड़े महाकाव्य का मूल्य ११) रुपये, डाक व्यय ४) रुपये।

२. श्री राघवेन्द्र चरित्र

श्री रामकथामृत (वीर रामायण) का संक्षिप्त रूपान्तर रामायणों में अनुपम पढ़ कर जीवन को दिव्य और पवित्र बनाइये। अपने परिवार को पढ़ाकर अपने गृह को स्वर्गतुल्य बनाइये। मूल्य चार रुपये।

३. आदर्श रामायण

आप के हाथ में ही इस समय है। स्नान करके इस आदर्श रामायण का प्रतिदिन पाठ कीजिये। मूल्य १॥ रुपये।

४. विजय पताका

हिन्दू धर्म और हिन्दू समाज को मिटा देने के लिए दुष्ट दैत्य दुराचारी राक्षसों ने कितने हत्याकांड किये कितने आक्रमण अग्निकांड विध्वंस और अत्याचार किये। कितने लाख मंदिरों को धराशायी किया कितने करोड़ हिन्दुओं का रक्त बहाया और उन पापात्माओं का हमारे महापुरुषों सम्राट् पृथ्वीराज, महाराणा संग्राम सिंह, महाराणा प्रताप सिंह, छत्रपति शिवाजी, गुरू गोविन्द सिंह, महात्मा वीर वैरागी, महाराज छत्रशाल, वीरवर दुर्गादास, समर्थ स्वामी रामदास महाराज और हमारे अनेक वीरों ने संतों ने सती माताओं ने मद-मर्दन कर हिन्दुत्व की विजय पताका फहरायी। इसे पढ़ कर जीवन में क्रान्ति हो जायेगी। मूल्य ३ रुपये।

●

आदर्श हिन्दू प्रकाशन
पञ्चखण्डपीठ, विराटनगर
पो० बैराट (जयपुर, राजस्थान)

दर्शन की

हनुमान भगवान का
पर्वत (पञ्चखण्ड पीठ) में
कीजिए। भगवान हनुमान
और आदर्श रूप में दर्शन दें

वज्रांगदेव महावीर, हनुमान भगवान का
प्रकार का दिव्य दर्शन अयोध्या चित्रकूट और संसार के किसी स्थान पर नहीं होगा।

महात्मा रामचन्द्र वीर ने अपने प्राणों को मृत्यु के मुख में डालकर भगवान हनुमान की इस अलौकिक मूर्त्ति का दर्शन हिन्दू मात्र के लिए सुलभ कर दिया है। जयपुर या अलवर से मोटर, बस द्वारा विराटनगर (वैराट) आइये। और दर्शन करके जीवन का आनन्द लीजिये।

दि एलाइड प्रेस, भागलपुर-२-७१।